

हरिभूमि महेन्द्रगढ़-नारनौल मूर्ति

रोहतक, रविवार 30 अगस्त 2026

11
स्वस्थ जीवनशैली के लिए नियमित रूप से खेलों...



12
हेड कांस्टेबल व शिक्षक के बंद मकान में चोरी, 40 लाख के जेवररात...



**RPS** COLLEGE OF VETERINARY SCIENCES

Permanently recognized by VCI & Affiliated to LUVAS, Hissar

2 Year Diploma Course
VLDD COURSE

Eligibility:- Must have passed XII in Any Stream (A Govt. Job Oriented Diploma)

90 SEATS

54 SEATS **STATE QUOTA**

36 SEATS **MANAGEMENT QUOTA**

Admissions Open 2026-27

Last Date of Registration 13 September, 2026

- World Class AC Infrastructure
- Multi-Speciality Veterinary Hospital



RPS पशु अस्पताल, बलाना

- पशुओं के अल्ट्रासाउंड व X-Ray की सुविधा
- पशुओं के खून, दूध, मूत्र, मल (गोबर) व चमड़ी आदि की उच्च स्तरीय मशीनों द्वारा जांच की सुविधा
- गर्भ परीक्षण जाँच

- छोटे व बड़े पशुओं के सभी प्रकार के ऑपरेशन करने की सुविधा

FREE OPD

24 घंटे सेवा उपलब्ध

SUNDAY OPEN

CALL FOR ADMISSIONS ☎ 01285-241430, 8222888337, 9812008844

8th Milestone Balana, Mahendergarh (HR)

www.rpsvetcollege.org

rpsvetcollege@gmail.com



10 दिन में ही जवाब दे गया नया पाथवे, संघ ने निर्माण गुणवत्ता पर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

यात्रियों की सुविधा के नाम पर रेलवे स्टेशन पर हाल ही में बनाया गया एंड पाथवे (पैदल पथ) निर्माण के महज 10-11 दिन बाद ही सवालों के घेरे में आ गया है। नई बनी सतह पर जगह-जगह कंकड़ और निर्माण सामग्री उखड़ने लगी है, किनारे टूट रहे हैं और फिनिशिंग भी कमजोर दिखाई दे रही है। इस स्थिति को लेकर दैनिक रेल यात्री एवं जन कल्याण संघ ने रेलवे प्रशासन पर गंभीर सवाल उठाते हुए पूरे निर्माण कार्य की स्वतंत्र तकनीकी जांच कराने की मांग की है।

संघ का कहना है कि जिस एंड पाथवे के निर्माण की मांग उसने लंबे समय से उठाई थी, उसके बनने के कुछ ही दिनों बाद उसकी हालत खराब होने लगी है। संघ के अनुसार 21 मई को संबंधित रेलवे अधिकारियों के साथ पत्राचार कर एंड पाथवे बनाने की मांग रखी गई थी। इसके जवाब में रेलवे विभाग ने 19 जून को पाथवे के निर्माण का आश्वासन दिया था। संघ के पदाधिकारियों के अनुसार उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक पंकज शर्मा के 19 अगस्त के नारनौल दौरे से ठीक एक दिन पहले 18 अगस्त को एंड पाथवे तैयार किया गया। अब निर्माण को महज 10-11

- नारनौल रेलवे स्टेशन पर नई सुविधा की सतह उखड़ने लगी
- दैनिक रेल यात्री एवं जन कल्याण संघ ने उठाई जांच की मांग, कहा तकनीकी परीक्षण कर तय हो जिम्मेदारी

दिन हुए हैं, लेकिन पाथवे की सतह की स्थिति ने निर्माण की गुणवत्ता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। संघ द्वारा मौके से ली गई तस्वीरों में पाथवे की सतह कई स्थानों पर उखड़ी दिखाई दे रही है। जगह-जगह कंकड़ और निर्माण सामग्री निकल रही है तथा सतह असमतल होने के साथ

ही किनारों के टूटने और फिनिशिंग कमजोर होने की शिकायत भी सामने आई है। संघ ने आशंका जताई है कि निर्माण कार्य में निर्धारित मानकों के अनुरूप सामग्री और प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया हो सकता है। हालांकि वास्तविक तकनीकी स्थिति जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।



सामान्य नहीं है इतनी जल्दी खराब होना

संघ अध्यक्ष गणेश शर्मा ने कहा कि किसी भी नवनिर्मित पाथवे का महज कुछ दिनों में इस प्रकार उखड़ना सामान्य बात नहीं है। यदि निर्माण कार्य निधारित तकनीकी मानकों के अनुसार हुआ है, तो रेलवे प्रशासन को तत्काल इसका तकनीकी परीक्षण करवाकर स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता में कमी या किसी प्रकार की अनियमितता सामने आने पर संबंधित ठेकेदार के साथ-साथ निर्माण कार्य की निगरानी और निरीक्षण करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए।

निष्पक्ष तकनीकी जांच की मांग

संघ के सचिव एडवोकेट महावीर जैन ने कहा कि यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे की ओर से कराए जा रहे निर्माण कार्यों में गुणवत्ता से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं किया जा सकता। सार्वजनिक धन से तैयार की गई सुविधा का कुछ ही दिनों में खराब होना गंभीर मामला है। रेलवे प्रशासन को यह स्पष्ट करना चाहिए कि निर्माण में कौन-सी सामग्री इस्तेमाल की गई, कौन-कौन से तकनीकी मानक निर्धारित थे और निर्माण कार्य पूरा होने से पहले गुणवत्ता की जांच किस स्तर पर की गई।

खबर संक्षेप

जानलेवा हमला, केस दर्ज

कनीना। सदर थाना अंतर्गत गांव नौताना में पिकअप गाड़ी को रोककर चालक के साथ मारपीट करने के आरोप में पुलिस ने केस दर्ज किया है। पीड़ित धर्मवीर ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि 14 अगस्त को पिकअप गाड़ी से भिवानी से कनीना लौट रहा था। नौताना गांव के पास बोलोरो कैपर और अन्य पिकअप में सवार छह-सात अज्ञात लोगों ने उनकी गाड़ी को रोक लिया तथा लाठी-डंडों से हमला कर दिया।

मासिक बैठक आज

मंडी अटेली। श्री कृष्ण बाल गोपाल गोशाला बिहाली में 30 अगस्त को मासिक बैठक का आयोजन किया जाएगा। बैठक में गोशाला की व्यवस्थाओं और आगामी विकास कार्यों को लेकर विस्तार से चर्चा की जाएगी। गोशाला के मैनेजर बलवीर सिंह ने बताया कि बैठक में गोशाला में विकास कार्यों को गति देने, व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने तथा अन्य आवश्यक विषयों पर सदस्यों से विचार-विमर्श किया जाएगा।

व्यक्ति का शव मिला

नारनौल। गंदे नाले पर रामानंद-राधेश्याम धर्मशाला के पास शुक्रवार को प्राप्त: करीब साढ़े दस बजे करीब 55 वर्षीय व्यक्ति का शव मिला। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पहचान के लिए सामान्य अस्पताल के शवगृह में रखवा दिया। आसपास के लोगों के अनुसार मृतक शराब पीने का आदी था। मृतक की पहचान रामसिंह पुत्र मातादीन, निवासी मांड़ी के रूप में होने की चर्चा है, लेकिन पुलिस ने इसकी पुष्टि नहीं की है।

खेल दिवस मनाया

सतनाली मंडी। राजकीय महाविद्यालय में महान हॉकी खिलाड़ी एवं हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर खेल दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने विभिन्न खेल गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डा. सुधीर लांबा ने कहा कि खेल शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्थापना दिवस 3 को

नारनौल। यादव कल्याण सभा की ओर से भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व एवं अपना 43वां स्थापना दिवस तीन सितंबर को यादव धर्मशाला प्रांगण में मनाया जाएगा। सभा के सचिव सुबेदार मेजर कंवर सिंह यादव ने बताया कि समारोह में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव मुख्य अतिथि होंगी।

13 प्रोफेसर और 4 रीडर समेत कुल 17 पद रिक्त

पटीकरा आयुर्वेद कॉलेज के नए दाखिलों पर आयोग की रोक, 100 सीटों पर संकट

17 प्रोफेसर-रीडर के पद खाली, मानक पूरे नहीं होने पर एनसीआईएसएम ने 2026-27 के लिए प्रवेश की अनुमति नहीं दी

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के गृह जिला के लिए बड़ी चिंता की खबर है। जिले के एकमात्र प्रमुख सरकारी आयुर्वेदिक शिक्षण संस्थान बाबा खेतानाथ राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं अस्पताल, पटीकरा में नए शैक्षणिक सत्र के दाखिलों पर संकट खड़ा हो गया है।

राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग (एनसीआईएसएम) ने अधिनियम 2020 की धारा 28 में निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए शैक्षणिक सत्र 2026-27 में बीएएमएस पाठ्यक्रम की 100 सीटों पर विद्यार्थियों को प्रवेश देने की वार्षिक अनुमति प्रदान करने से



नारनौल। आयुर्वेद कॉलेज पटीकरा।

फोटो : हरिभूमि

इनकार कर दिया है। ऐसे में इस सरकारी कॉलेज में नए विद्यार्थियों के दाखिले का रास्ता फिलहाल बंद हो गया है। आयोग के इस फैसले के पीछे सबसे बड़ी वजह कॉलेज में शिक्षकों के स्वीकृत पदों के मुकाबले बड़ी संख्या में पदों का रिक्त होना सामने आ रही है। कॉलेज में प्रोफेसर और रीडर के करीब 54 पद स्वीकृत हैं, जबकि इनमें से लगभग 37 पद ही भरे हुए बताए जा रहे हैं। इस हिसाब से 13 प्रोफेसर और 4 रीडर समेत कुल 17 पद रिक्त हैं। शिक्षकों की

इस कमी का सीधा असर बीएएमएस की प्रवेश क्षमता पर पड़ा है और इसी वजह से आयोग ने नए सत्र के लिए अनुमति देने से इनकार किया है।

कॉलेज प्रशासन ने आयोग के फैसले को अंतिम मानकर हाथ पर हाथ नहीं धरे हैं। प्राचार्य डॉ. एमएस श्रीनिवास ने 26 अगस्त को आयोग को ईमेल भेजकर कॉलेज का पक्ष रखा और 27 अगस्त को आयोग मुख्यालय पहुंचकर अधिकारियों के समक्ष व्यक्तिगत रूप से भी अपना पक्ष रखा।

2022 में 100 सीटों से शुरू हुआ था कॉलेज

बाबा खेतानाथ राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं अस्पताल की शुरुआत वर्ष 2022 में बीएएमएस की 100 सीटों के साथ हुई थी। इसके बाद लगातार चार बैच में विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जा चुका है। बीएएमएस पाठ्यक्रम करीब साढ़े चार वर्ष का होता है, जिसके बाद एक वर्ष की अनिवार्य इंटरशिप करनी होती है।

दोबारा मिलेगी दाखिले की अनुमति

कॉलेज को अगले सत्र में दाखिले की अनुमति नहीं मिली है। राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग ने प्रदेश की अनुमति देने से इनकार किया है। कॉलेज प्रशासन की ओर से दोबारा अनुमति प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। हरियाणा सरकार के आयुर्वेद विभाग के अपर मुख्य सचिव की मदद से केंद्रीय आयोग से बातचीत की गई है। आयोग को ईमेल भी भेजा गया है और स्वयं आयोग मुख्यालय जाकर अधिकारियों के सामने कॉलेज का पक्ष रखा गया है। उम्मीद है कि कॉलेज की स्थिति पर विचार करते हुए विद्यार्थियों के हित में दोबारा दाखिले की अनुमति मिल सकेगी।

डॉ. एमएस श्रीनिवास, प्राचार्य, आयुर्वेद कॉलेज पटीकरा



स्थानांतरण के बाद नहीं मिली राहत

कॉलेज में शिक्षकों की कमी कोई नई समस्या नहीं है। कॉलेज प्रशासन की ओर से समय-समय पर एचपीएससी, आयुर्वेद विभाग एवं सरकार के उच्चाधिकारियों को पत्राचार के माध्यम से प्रोफेसर और रीडर के रिक्त पदों को भरने की आवश्यकता से अवगत कराया जाता रहा है। करीब दस दिन पहले आयुर्वेद विभाग की ओर से कुरुक्षेत्र आयुर्वेद विश्वविद्यालय से नौ विशेषज्ञ प्रोफेसरों का नारनौल कॉलेज के लिए स्थानांतरण किया गया था, लेकिन संबंधित शिक्षकों ने यहां कार्यभार वाहण नहीं किया और मामला उच्च न्यायालय चला गया, जहां उन्हें स्थगन (स्टे) आदेश मिल गया।

17 पद खाली, 85 सीटों पर असर का गणित

कॉलेज में प्रोफेसर और रीडर के करीब 54 स्वीकृत पद हैं। इनमें लगभग 37 पद भरे हैं, जबकि 17 पद रिक्त हैं। एक शिक्षक पद के हिसाब से पांच विद्यार्थियों का मानक माना जाए तो 17 रिक्त पदों के कारण 85 विद्यार्थियों की क्षमता प्रभावित होती है। 50 से कम सीटों पर एडमिशन देने का नियम नहीं है और यहां शिक्षकों के अनुपात में लगभग 85 सीटें रिक्त रह जाती हैं।

कॉलेज के अस्तित्व पर संकट

आयोग के फैसले को लेकर क्षेत्र में इसे कॉलेज के अस्तित्व पर संकट के रूप में देखा जा रहा है, लेकिन तकनीकी रूप से फिलहाल 2026-27 में नए दाखिलों की अनुमति नहीं मिली है। कॉलेज में पहले से अध्ययनरत विद्यार्थियों की पढ़ाई और उनकी डिग्री पूरी कराने की व्यवस्था का सवाल अलग है। इसलिए इस फैसले का सबसे तत्काल असर नए सत्र की 100 सीटों पर पड़ना है।

नर्स पत्नी पर चिकित्सक पति ने फेंका उबला पानी

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

शहर के कैलाश नगर में घरेलू विवाद के बीच निजी चिकित्सक पर अपनी नर्स पत्नी ने मारपीट करने और चेहरे पर उबलता पानी डालने का आरोप लगाया है। पीड़िता सरकारी अस्पताल में स्ट्राफ नर्स है। इस घटना में महिला गंभीर रूप से झुलस गई। उसे नागरिक अस्पताल में भर्ती करवाया गया। पुलिस ने पीड़िता के भाई की शिकायत और बाद में महिला के बयान के आधार पर आरोपित पति के खिलाफ केस दर्ज करवाया

है। पीड़िता के भाई ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी बहन की शादी करीब 15 वर्ष पहले हुई थी। अब दो बच्चे हैं। आरोपित शराब पीने का आदी है और अक्सर नशे की हालत में पत्नी व बच्चों के साथ मारपीट करता है।

आरोप है कि बीती रात करीब 10 बजे आरोपित ने शराब के नशे में बहाने के साथ मारपीट की और उसके चेहरे पर उबलता पानी डाल दिया। शोर सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और महिला को बचाया। इसके बाद आरोपित कथित तौर पर जान से मारने की धमकी

देकर फरार हो गया। घटना के बाद पीड़िता को नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्रारंभिक जांच के दौरान चिकित्सकों ने उसे बयान देने के लिए अयोग्य बताया। इसके बाद पुलिस ने उसके भाई का बयान दर्ज किया। मेडिकल लीगल रिपोर्ट में महिला के शरीर पर जलने से संबंधित पांच चोटों का उल्लेख किया गया है। बाद में जब चिकित्सकों ने महिला को बयान देने के लिए फिट घोषित किया, तब पुलिस ने उसका बयान भी दर्ज किया। महिला के बयान और मेडिकल रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपित पति पर केस दर्ज कर लिया।

मैकेनिकल कर्मचारी यूनियन ने दिया धरना

कर्मचारियों को मिलने का समय नहीं दिया

मंगलवार तक समस्या के समाधान की मांग

हरिभूमि न्यूज ►► कनीना

पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल कर्मचारी यूनियन के पदाधिकारियों की शनिवार को बैठक कान्हासिंह पार्क में आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता ब्रांच प्रधान नरेंद्र सिंह ने की। ब्रांच सचिव नवीन कुमार व प्रधान नरेंद्र सिंह ने कहा कि

अधिकारियों के निम्न रवैये के चलते पिछले दो वर्षों से उनकी जायज मांगों व समस्याएं लंबित पड़ी हुई हैं। जिनके समाधान के लिए संगठन के शिष्टमंडल ने मंडल पिछले समय कार्यकारी अभियंता, मंडल कार्यालय अटेली से मिलकर अवगत कराया था। लगभग 20 दिन बीत जाने के बाद भी, न तो कर्मचारियों को मिलने का समय दिया गया और न ही किसी समस्या का समाधान किया गया है। यूनियन ने आगामी मंगलवार तक समस्या के समाधान की मांग की है, समाधान नहीं होने पर धरना-प्रदर्शन करने पर उतारू होंगे। इस मौके पर सूबेसिंह, सचिन रंगा उपस्थित रहे।

कार्रवाई के लिए थाना व टोल प्लाजा के चक्कर काटने को मजबूर कार मालिक

आर्थिक नुकसान के साथ अन्य जोखिम की बढ़ी आशंका

हरिभूमि न्यूज ►► नांगल चौधरी

सिलारपुर-तोताहेड़ी निवासी अक्षय कुमार की परेशानी इन दिनों लगातार बढ़ती जा रही है। निजी कार्यों के लिए इस्तेमाल होने वाली उनकी वाहन कार के नाम पर कोई दूसरा वाहन सड़क पर दौड़ रहा है। जिसका बीते

एक सप्ताह में आठ ऑनलाइन चालान तथा 20 से अधिक टोल शुल्क कट चुका है। चालान के नोटिस वैगनार मालिक को मिले हैं, जिससे पुलिस प्रशासन को अवगत करवा दिया। इसके बावजूद कार्रवाई नहीं होने से ऑनलाइन चालान के नोटिस निरंतर बढ़ रहे हैं।

पीड़ित कार मालिक ने करीब एक महीने पहले मोबाइल पर अचानक तीन-चार ऑनलाइन चालान के मैसेज आए। उन्होंने इसे अनजाने में रेंड लाइट या यातायात नियमों के उल्लंघन से जुड़ा चालान समझकर जुर्माना भी जमा करवा दिया। इसके बाद चालानों के मैसेज लगातार तेजी से आने लगे। साथ ही

उन्के निजी फास्टेज खाते से ऐसे टोल टैक्स कटने लगे, जहां उनकी वैगनार कार गई ही नहीं थी। मामले की ऑनलाइन पड़ताल करने पर अक्षय के होश उड़ गए। चालान पोर्टल पर उनके वाहन नंबर के साथ वैगनार की बजाय एक पिकअप वाहन की फोटो दिखाई दे रही है। पिकअप की नंबर प्लेट पर भी उनकी वाहनार का नंबर अंकित है। इससे स्पष्ट हुआ कि किसी अन्य वाहन पर उनकी गाड़ी का नंबर लगाकर उसे सड़क पर दौड़ाया जा रहा है। पीड़ित ने बताया कि उसने टोल कर्मियों से संपर्क कर फर्जी नंबर प्लेट वाले वाहन को पकड़ने और मामले की शिकायत दर्ज करने की

शिकायत मिली, लेकिन पकड़ना असंभव

थाना इंचार्ज पवन कुमार ने बताया कि सिलारपुर निवासी एक युवक ने निजी वैगनार कार की नंबर प्लेट से राजस्थान में पिकअप चलने की शिकायत दी थी। जिसके कई चालान होने के साथ टोल टैक्स भी कट रहे हैं, लेकिन राजस्थान में जाकर उक्त पिकअप को पकड़ना संभव नहीं। यहां टोल प्लाजा पर पिकअप के नंबर नोट करवा दिए हैं, कभी इश्वर आई, तो काबू कर लिया जाएगा।

गुहार लगाई, लेकिन टोल कर्मियों ने इसे पुलिस का मामला बताते हुए शिकायत लेने से इनकार कर दिया। इसके बाद वह थाने पहुंचा, तो वहां से भी उसे टोल कर्मियों के पास जाने की बात कहकर वापस लौटा दिया गया। लगातार बढ़ रहे फर्जी चालानों और टोल कटौती से अक्षय को अब प्रशासनिक कार्रवाई का उर सताने लगा है। उनका कहना है कि वाहन

कोई और चला रहा है, लेकिन चालान और अन्य कार्रवाई उनकी वैगनार के नंबर पर हो रही है। उन्होंने जिला पुलिस अधीक्षक से मामले की जांच कर फर्जी नंबर प्लेट लगाकर वाहन चलाने वाले गिरोह को पकड़ने, भविष्य में होने वाले चालानों पर रोक लगाने तथा पहले से जारी ऑनलाइन चालानों को रद्द करवाने की मांग की है।

सप्ताह में 8 चालान व 20 से अधिक टोल कटने से कार मालिक परेशान

सिलारपुर की कार के नंबर पर राजस्थान में चल रही पिकअप



निवेश से पहले समझें कौन सा प्लान सबसे बेहतर

न्यूचुअल फंड निवेश में एक्सपेंस रेटियो का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि निवेश लंबे समय के लिए किया जाता है। यदि दो समान योजनाओं में से एक में खर्च लगाता थोड़ा अधिक है, तो कई वर्षों में इसका असर निवेश के कुल मूल्य पर पड़ सकता है। इसीलिए निवेशक को केवल पिछले रिटर्न को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। उसे एक्सपेंस रेटियो, फंड का प्रदर्शन, जोखिम, निवेश का उद्देश्य और अपने निवेश की अवधि जैसे पहलुओं को भी देखना चाहिए।

बिजनेस डेस्क

म्यू चुअल फंड में निवेश का फैसला करते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कौन सा फंड अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि वह डायरेक्ट प्लान में निवेश कर रहा है या रेगुलर प्लान में। दोनों विकल्पों में अमतौर पर एक ही म्यूचुअल फंड स्कीम और एक ही फंड मैनेजर के जरिए निवेश किया जाता है, लेकिन दोनों की लागत संरचना अलग होती है। यही अंतर लंबी अवधि में निवेश के रिटर्न पर असर डाल सकता है। निवेशक के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान में अंतर क्या है और इनमें से कौन सा विकल्प उसके लिए बेहतर है। इसका जवाब हर निवेशक के लिए एक जैसा नहीं हो सकता। यदि निवेशक खुद फंड की रिसर्च कर सकता है और अपने पोर्टफोलियो को संभालने में सक्षम है तो डायरेक्ट प्लान कम लागत वाला विकल्प हो सकता है। वहीं नए या ऐसे निवेशक जिन्हें फंड चुनने और निवेश प्रबंधन में मदद चाहिए, उनके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी हो सकता है।



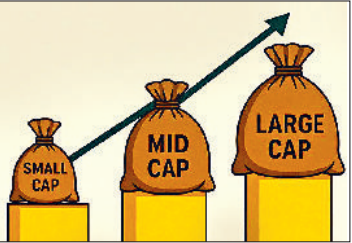
रेगुलर प्लान में निवेशक म्यूचुअल फंड कंपनी यानी एएससी तक सीधे नहीं पहुंचता। वह बैंक, म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर, ब्रोकर या वित्तीय सलाहकार के माध्यम से निवेश करता है। निवेश प्रक्रिया पूरी करने के साथ-साथ डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक को फंड चुनने, कागजी प्राप्ति और निवेश से जुड़ी दूसरी सेवाओं से भी मदद कर सकता है। इसी सेवा को लागत भी होती है। म्यूचुअल फंड कंपनी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन देती है और यह खर्च फंड के एकाग्रण से रेटियों में शामिल होता है। इसलिए आमतर पर रेगुलर प्लान का एएसएसपेक्ट रेटियों की पक्की के डायरेक्ट प्लान की तुलना में अधिक होता है।

- » रेगुलर प्लान ऐसे निवेशकों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें निवेश की जानकारी सीमित है या जो फंड चुनने और पोर्टफोलियो संभालने में विशेषज्ञ की मदद चाहते हैं।
- » निवेशक के लिए कई बार सही फंड चुनना, जोखिम का आकलन करना, निवेश की अवधि तय करना और पोर्टफोलियो में बदलाव करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ऐसे में डिस्ट्रीब्यूटर की सहायता सुविधा प्रदान कर सकती है। हालाँकि निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि इस सुविधा की लागत फंड के खर्च में शामिल होती है।

डायवर्सक प्लानया रेगुलर प्लान चुनने से पहले निवेशक को अपनी वित्तीय स्थिति और जानकारी का आकलन करना चाहिए। केवल वह सोचकर डायवर्सक प्लान चुनना उचित नहीं है कि उसका एसएसएस रेटियो कम है। इसी तरह केवल सुविधा के लिए रेगुलर प्लान लेना भी जरूरी नहीं है। निवेशक को यह देखना चाहिए कि वह कितने समय के लिए निवेश कर रहा है, कितना जोखिम उठा सकता है, फंड की लागत कितनी है और क्या वह अपने निवेश की निगरानी खुद कर सकता है।

डायरेक्ट प्लान ओर रेगुलर प्लान के बीच चुनाव व्यक्तिगत जरूरत पर निर्भर करता है। डायरेक्ट प्लान में कम लागत का फायदा मिल सकता है, जबकि रेगुलर प्लान में डिस्ट्रिब्यूटर की सहायता ओर सुविधा मिलती है। दोनों में निवेश का बाजार जोखिम बना रहता है। इसलिए निवेश करने से पहले केवल प्लान का नाम देखकर फैसला न करें। फंड के उद्देश्य, जोखिम, एक्सपेंस रेटियो, पिछला प्रदर्शन, निवेश अवधि ओर अपनी वित्तीय जरूरतों को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर योग्य निवेशी सलाहकार से सलाह लेकर ही निवेश का निर्णय लेना बेहतर है।

लार्ज, मिड या स्मॉल कैप कहां बनेगा बड़ा फंड

**बिजनेस डेस्क**

हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी शुरू करने वाले निवेशक के मामले सबसे बड़ा साला होना है कि पिछा लार्ज, जिम या स्मॉल कैप फंड में शामिल जाय। तीनों कैटेगरी में जोखिम और रिस्क का संभावना अलग होती है। इसलिए फैसला फिखले एक साल के रिस्क को देखकर करना पड़ सकता है रानीगीत नहीं है। इक्विटी फंड्स का फंड में निवेश का फायदा तभी बढ़ता है तुरंत से मिल सकता है, जब निवेशक लंबी अवधि तक बाजार में बना रहे और उतार-चढ़ाव के दौरान धैर्य रखकर एसआईपी बंद न करे। पहले समझिए तीनों कैटेगरी में अंतर

एक निवेशक के वॉर्किंग कैप ऑनसर लार्ज कैप फंड मुख्य रूप से बाजार पूंजीकरण के आधार पर देश की शीर्ष 200 कंपनियाँ में निवेश करते हैं। 101वीं से 250वीं रैंक वाली कंपनियाँ मिडकेप और निवेशक बाद की कंपनियाँ स्मॉल कैप शेणी में आती हैं। लार्ज कैप कंपनियाँ आकार में बड़ी और स्थिरता पाते हैं। इसीलिए इनके कारोबार में अपेक्षाकृत स्थिरता देखने को मिल सकती है। हालाँकि इसका मतलब यह बिस्वास नहीं है कि लार्ज कैप फंड सुरक्षित हैं जिससे मुक्त नहीं है। शेयर बाजार में बड़ी विराट आने पर इनमें भी असुधार हो सकता है। गैर कैप कंपनियाँ आकार में लार्ज कैप से छोटी होती हैं, लेकिन इनमें कारोबार तेज़ी से बढ़ाने की संभावना हो सकती है। इसी वजह से इनके शेयरों में उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है।

आज कोई निवेशक पहली बार इन्विटि
म्यूचुअल फंड में एसआरटीए शुरू कर रहा है।
अगर बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं चाहता, तो
लॉन्ग टर्म कैप फंड अपेक्षाकृत आसान शुरुआत हो
सकते हैं। बड़ी कंपनियाँ के पास आम तौर पर
लंबा कारोबारी ट्रैक रिकॉर्ड और मजबूत
कारोबार होता है। फिर भी निवेशक को यह
समझना चाहिए कि लार्ज कैप का मतलब
गारंटीड रिटर्न नहीं है। बाजार में 15-20% की
वृद्धि देखिए आती है तो लार्ज फंड भी नीचे जा सकते
हैं। अन्तर केवल इतना है कि मिड कैप और
स्मॉल कैप की तुलना में उतार-चढ़ाव कई बार
कम हो सकता है।

5,000 रुपये को मासिक पसआईपी 15 साल तक जाना रखने पर कुल निवेश 9 लाख रुपये होगा। उदाहरण के लिए, पिछले 15 वर्षों के औसत सालाना रिटर्न को आधार मानकर 14% के लिए रिटर्न 11.9%, जिस कैप के लिए 17.2% और स्मॉल कैप के लिए 14.7% रिटर्न मांग के हैं। अलग-अलग कटेडोरी में निवेश से रकम अलग बच सकती है। उपरोक्त अनुमान में 2,500 लॉन्ग कैप, 1,500 मिड कैप और 1,000 रुपये स्मॉल कैप में लगाने पर ऐतिहासिक औसत रिटर्न को सिंग उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करने पर 15 साल में कैप की कुल 28.7 लाख का फंड बन सकता है। इस लगभग 9 लाख मूल निवेश और करीब 19.7 लाख का अनुमानित लाभ शामिल होगा। हालांकि यह सिर्फ अपेक्षित अनुमान है। बाजार का वास्तविक रिटर्न हर साल अलग हो सकता है और भविष्य में यही रिटर्न दोहराना जाएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

बेजनेस डेस्क

समय से पहले एफडी बंद करने का सबसे बड़ा
असर मिलने वाले ब्याज पर पड़ सकता है। एफडी
बनाने लगने जितने ब्याज दर का निर्धारण किया
गया था, जरूरी नहीं कि समय से पहले एफडी बंद
करने पर उसी दर से ब्याज मिले। बैंक अमतौर पर
उस अवधि के आधार पर ब्याज की गणना
कर सकता है, जितने समय तक रकम वास्तव में
एफडी में रखा रही। इसके अलावा समयपूर्व
निकासी का शुल्क भी लगाया जा सकता है।
उदाहरण के लिए, यदि आपने पांच साल के लिए
एफडी करवाई थी, लेकिन दो साल बाद ही उसे बंद
कर दिया, तो आपको पांच साल की तय ब्याज दर
का पूरा लाभ नहीं मिल सकता।

एफडी से मिलने वाला ब्याज आपकी आय का हिस्सा माना जाता है और उस पर लागू आयकर निर्गमों के अनुसार कर देवदारों बका सकती है। इन्फ्लेशन समय से पहले एफडी बंद करने का फैसला करते समय केवल थ्रूथ नॉट ध्यान न दें। यह भी देखें कि एफडी से अब तक कितना ब्याज अर्जित हुआ है और उस पर आपकी कर देवदारों कितनी बका सकती है। अलग-अलग निवेशकों को कर स्थिति अलग हो सकती है।



अगर आपको थोड़े समय के लिए पैसों की जरूरत है तो पूरी एकपत्री बंद करना हमेशा जरूरी नहीं है। अपने बैंक से यह बात करवा जा सकता है कि एकपत्री के बदले कर्ज या अधिग्रहण की सुविधा उपलब्ध है या नहीं। इस व्यवस्था में एकपत्री को जारी रखते हुए उसकी जमानत के आधार पर जरूरत की रकम प्राप्त की जा सकती है। इससे एकपत्री पूरी तरह बंद करने से होने वाले ब्याज के नुकसान से बचने का मौका मिल सकता है। हालांकि, इस विकल्प में बैंक कर्ज पर ब्याज और अन्य शुल्क ले सकता है।

अगर आपको एफडी में जमा पूरी रकम की जरूरत नहीं है तो पहले यह पता करें कि आपका

पैसों की जरूरत में एफडी बंद करना जरूरी नहीं, घटेगी ब्याज की रकम

वै क की साधवि जमा याथी एफडी को सुरक्षित निवेश का साधन माना जाता है। यहाँ वजह है कि बड़ी संख्या में लोग अपनी बचत को निश्चित अवधि के लिए एफडी में करना करते हैं। लेकिन कई बार अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है और निवेशकों को एफडी की अवधि पूरी होने से पहले ही रकम निकालने का फैसला करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एफडी को खोलने से पहले बंद करना संभव है, लेकिन इसके कुछ आर्थिक मुकसान भी हो सकते हैं। एफडी शुरू करते समय बैंक एक निश्चित अवधि और ब्याज दर तय करता है। यदि निवेशक उस अवधि के पूरा होने से पहले एफडी बंद करता है तो जरूरी नहीं है कि उसे शुरुआत में तय ब्याज दर का पूरा लाभ मिले। बैंक के नियमों के अनुसार ब्याज में कटौती भी जा सकती है और कुछ मामलों में समय से पहले एफडी बंद करने का शुल्क भी लगाया जा सकता है। इसलिए जल्दबाजी में एफडी तोड़ने के बजाय पहले इन पांच जरूरी बातों को समझ लेना चाहिए

1. समय से पहले एफडी बंद कर पलग सकता है शुल्क

सबसे पहले अपने बैंक के नियमों की जानकारी लें। एफडी की तय अवधि पूरी होने से पहले पैसा निकालने पर बैंक समय-पूरि निकासी शुल्क या नुकसान लगा सकता है। यह शुल्क बैंक, एफडी या अवधि और जमा की गई रकम के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। इसलिए एफडी बंद करने से पहले बैंक से यह ज्ञात करा करें कि शुल्क के रूप में कितनी राकम कटायी जाएगी और एफडी बंद करने के बाद आपकी खाते में शेषराशि का रूप से किन्नी राशि आएगी।

त्योहारों पर आसान किस्त
और छूट के प्रस्ताव बढ़ेंगे



योंधारों का मौसम शुरू होते ही बाजार और ऑनलाइन बाजारों में पंजीकृत और तरह-तरह के आकर्षक ऑफर आने लगते हैं। मोबाइल, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन से लेकर कर्नल और दूसरे महंगे सामान पर भारी छूट के साथ असाधारण मारिकट किस्सों के प्रस्ताव बाहकों को खरीदारों के लिए आकर्षित करते हैं। इनमें नो-कोस्ट ईसएमए या बिना व्याज वाली किस्स का प्रस्ताव सबसे ज्यादा मुनाफा देता है। बाहकों को लगता है कि महंगे सामान बिना अतिरिक्त व्याज के छोटे-छोटे मुनाफानों में खरीदारों को लगेगा। लेकिन योंधारों को खरीदारों में इस तरह के प्रस्ताव को देखकर तुरंत फैसला करना समझदार नहीं है। नो-कोस्ट का मतलब वह जरूरी नहीं कि खरीदार को से जुड़ी कोई लागत ही नहीं होगी। कई मामलों में प्रस्तावण शुल्क, कर, छूटी हुई तत्काल छूट, समय-समय पर होने वाले कर्ज बंद करण का शुल्क या देर से मुनाफा न मिलना जैसी बाहकों की कुल लागत बढ़ा सकता है। अलग-अलग नज्दों का और अज्दबात अप्पनी अलग शर्तें रखते हैं। अज्दबात, 2026 में बैंकों को प्रकाशित शुल्क तालिकाओं के अनुसार सुविधा के लिए प्रस्तावण शुल्क और समय-समय पर मुनाफा शुल्क के अलग-अलग प्राधान्य दिखाइए देंगे। इसलिए इस योंधारों मौसम में खरीदारी से पहले केवल मारिकट किस्स नहीं, बल्कि कुल मुनाफा पर नजर रखना जरूरी है।

पहले तय करें, सामान की जरूरत है या नहीं
 व्योहारों में सबसे बड़ी गलती यही होती है कि बाहरी
 जरूरत से ज्यादा खरीदारी कर लेता है। इन्होंने बचत
 धूल देबारा नहीं मिलेगी या इतनी कम किस्त में
 सामान मिल रहा है? जैसी सोच खरीदारी का फैसला
 प्रभावित कर सकती है। इसे बचत का आसान तरीका
 है कि बाजार जाने या ऑनलाइन खरीदारी शुरू करने
 से पहले जरूरी सामान की सूची बना लें। जो सामान
 पहले से खरीदने की योजना में नहीं था, उसे केवल धूल
 या किस्त के प्रस्ताव के कारण खरीदने से बचें। याद
 रखें, जिस सामान की जरूरत नहीं है, उस पर मिलने
 वाली बड़ी धूल भी वास्तव में बचत नहीं है। उदा., उसकी
 मासिक किस्त आपको आने वाले महीनों के बचत को
 प्रभावित कर सकती है।

किस्त लेन से पहले बचो। वित्तिय संस्था से यह जरूरी पूछो कि प्रसंस्करण शुल्क कितना है। यह एक निश्चित रूप में हो सकती है या खरीदारी की रकम के आधार पर तय हो सकती है। इस पर लागू कर की जानकारी भी लें। कुछ बैंकों की 2026 की शर्तों में किस्त सुविधा पर न्यूनतरण शुल्क निगदित है। इसलिए हर नो-कॉस्ट प्रस्ताव की वास्तविक लागत अलग हो सकती है।

लुथरान् आर्पफ का फायदा उठाना गतान नही है। लेकिन छूट का मतलब बचत तभी है जब खरीदारी का आपके बजट के भीतर हो। खरीदारी की एक मरम पहले से तय करें और उसी सीमा में सामान खरीदीं। अगर कोई सामान जरूरत का है और उस पर पारस्विक छूट मिल रही है, हिरक्त की कुल लागत राश्ट है और मासिक भुगतान आसानी से किया जा सकता है तो प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है। केवल 'आज का ऑफर' 'सीमित समय की छूट' या 'बिना ध्यान की हिरक्त' देखकर उपादा खर्च करना आर्थिक ह्वाव बढ़ता है।

- पहला, सामान की नकद कीमत और किस्त में कुल भुगतान कितना है।
- दूसरा, तत्काल छूट छोड़ने पर आपको कितना नुकसान हो रहा है।
- तीसरा, प्रसंस्करण शुल्क और उस पर लगने वाले कर कितने हैं।
- चौथा, समय से पहले किस्त बंद करने पर कोई शुल्क लगेगा या नहीं।
- पांचवां, देर से भुगतान की स्थिति में कितना अतिरिक्त खर्च हो सकता है।

नो-कोस्ट ईएमआई खराब विकल्प नहीं है, लेकिन इसे तभी चुनना समझदारी है जब सामान की जरूरत हो, कुल लागत स्पष्ट हो और किस्त आपकी आर्थिक क्षमता के भीतर हो। आसान किस्त देखकर नहीं, पूरी कीमत देखकर फैसला करें।

खबर संक्षेप

विजेता प्रतिभागियों को किया सम्मानित

नांगल चौधरी। शहीद मेजर सतीश दहिया राजकीय महाविद्यालय में मेजर ध्यानचंद जयंती पर प्राचार्य डॉ. अनिल यादव की अध्यक्षता में खेल प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें विजेता खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान युवाओं को नशाखोरी पर अंकुश लगाने के लिए प्रेरित किया है। इसके बाद खेल स्पर्धा कराई गई। वॉलीबॉल प्रतियोगिता में टीम ए और टीम बी के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। तीन सेट तक चले रोमांचक मुकाबले में टीम ए ने टीम बी को 2-1 से हराकर प्रतियोगिता अपने नाम की। वहीं कबड्डी प्रतियोगिता में टीम ए ने टीम बी को 25-7 के अंतर से पराजित किया।

प्रतियोगिता में युदवंशी के विद्यार्थी प्रथम

नारनौल। युदवंशी शिक्षा निकेतन की छात्राओं ने ब्लॉक स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम में शानदार प्रदर्शन करते हुए ग्रुप सॉन (बालिका वर्ग 11) प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त व एकल गायन (रागनी) में दीक्षा पुत्री ईश्वर चन्द ने प्रथम स्थान व फैन्सी ड्रेस में रितिका पुत्री अजय कुमार ने भी प्रथम, अमिताय्य पुत्र युधिर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पेंटिंग प्रतियोगिता में याशिका पुत्री अनिल कुमार ने प्रथम व मानसी पुत्री दीपक कुमार ने तृतीय स्थान पाकर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। प्रधानाचार्य नरेश कुमार ने छात्राओं की मेहनत एवं प्रतिभा की सराहना की।



ब्लॉक स्तरीय अंडर-11 सांस्कृतिक उत्सव में बीआर स्कूल का शानदार प्रदर्शन

महेंद्रगढ़। ब्लॉक स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय सुरुजनवास के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में रागिनी, समूह ज्ञान सहित अनेक सांस्कृतिक एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र विनीत पुत्र विजय कुमार ने रागिनी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। वहीं समूह ज्ञान प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्रा टीम ने तृतीय स्थान हासिल किया। विजेता एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों का प्रधानाचार्य रामबीर यादव एवं विद्यालय स्टाफ द्वारा उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राइमरी स्टाफ सदस्य ईशू, कल्पना, रचना, सरनी, प्रतीक्षा, मोनिका, नवीता, मंजू, संदीप संगीत अह्यापक, लक्ष्मीबाई, अनु रानी, रीना सोमन, सरिता, मोनिका यादव, मंजू यादव, पूजा एवं मंजू सैनी सहित समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

सामान्य ज्ञान में इंडस वैली पब्लिक स्कूल का बोलबाला

महेंद्रगढ़। इंडस वैली पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर हरियाणा गौरव पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। राष्ट्रीय शिक्षा समिति टोहना फतेहाबाद द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इंडस वैली पब्लिक स्कूल की टीम ने अपनी उत्कृष्ट तैयारी, आत्मविश्वास और ज्ञान के बल पर प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों से जुड़े प्रश्नों के सही उत्तर देकर सभी को प्रभावित किया और अपनी मेहनत का परिचय दिया। प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों के ज्ञान, आत्मविश्वास और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती हैं। प्राचार्य जयवीर सिंह यादव ने बताया कि सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में कक्षा 10वीं से तन्वु चौहान पुत्री मनोज, कक्षा 8वीं से दक्ष पुत्र महेश, रुडेश पुत्र संजु, काव्या पुत्री प्रवीण, 6वीं से रेवंश पुत्र सुरेश हरियाणा स्तर पर मेरिट स्थान प्राप्त कर हरियाणा गौरव पुरस्कार प्राप्त किया और बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिता विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, तार्किक कौशल और भाषा ज्ञान को निखारने का एक सफल माध्यम है, जो उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। कार्यक्रम में संस्था चेयरमैन धर्मेद यादव, उप चेयरमैन विजय सिंह यादव, निदेशक केसी यादव, उप प्राचार्य वीर सिंह यादव सहित समस्त शिक्षकगण मौजूद रहे।

मालड़ा की बेटी नेहा ने 99.9 फीसदी के साथ की नीट जेआरएफ

महेंद्रगढ़। गांव मालड़ा की होनहार बेटी नेहा शर्मा ने यूजीसी नीट-जेआरएफ की जून 2026 परीक्षा में 99.9 फीसदी अंक प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण की। नेहा ने इस सफलता से दा दा - दा दी और माता-पिता के सपने को साकार किया है। नेहा के पिता कैप्टन महवीर प्रसाद भारतीय सेना में कैप्टन के पद से सेवानिवृत्त हैं। इस मौके पर दादी लाली देवी, मंजू शर्मा, पवन शर्मा, उमेश शर्मा, सुरेश शर्मा, प्रदीप शर्मा, सरला देवी, सतीश, रेवू, रिनु, गायत्री देवी, जगदीश प्रसाद, दिनेश शर्मा, कविता, मीनाक्षी, तनमय देव, जानवी और ललितक सहित परिवार के अन्य सदस्य मौजूद रहे।



हरिभूमि न्यूज ॥ मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव फतनी (फतेहपुरा) स्थित भगवान शिव के पावन मंदिर में शनिवार को शिव परिवार की मूर्तियों की विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा करवाई गई। स्वयंभू शिवलिंग के कारण विशेष धार्मिक आस्था रखने वाले इस मंदिर में हुए पावन आयोजन के दौरान पूरा वातावरण शिवमय हो गया। वैदिक मंत्रोच्चारण, पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच शिव परिवार की प्राण-प्रतिष्ठा संपन्न हुई। अटेली निवासी राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता-

राष्ट्रीय खेल दिवस पर महाविद्यालय में प्रतियोगिताएं स्वस्थ जीवनशैली के लिए नियमित रूप से खेलों से जुड़ने का किया आह्वान



महेंद्रगढ़। अतिथि का स्वागत करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

यह बोले मुख्यातिथि

मुख्य अतिथि प्रो. संजय जोशी ने हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि खेलों में हार-जीत से अधिक महत्वपूर्ण प्रतिभा, खेल भावना और निरंतर प्रयास हैं। खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं सकारात्मक सोच का भी विकास करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवनभर किसी न किसी खेल से जुड़े रहने और नियमित अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि प्रो. महेंद्र सिंह ने खेल को आत्मा और मन के सबसे सुंदर मिलन का माध्यम बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति नियमित रूप से खेल गतिविधियों से जुड़ा रहता है, उसके शरीर और मन में बेहतर सामंजस्य स्थापित होता है। खेल व्यक्ति को सकारात्मक सोच, सही दिशा और जीतने में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी सक्रिय भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. विजय यादव ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, समस्त स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी निरंतर बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा स्वस्थ एवं अनुशासित जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

टॉस के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए स्टाफ टीम ने शानदार प्रदर्शन किया और निर्धारित 10 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर 85 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी विद्यार्थियों की टीम ने

बेहतरीन खेल कौशल का प्रदर्शन करते हुए मात्र 2 विकेट खोकर 8 विकेट से मुकाबला अपने नाम कर लिया। विद्यार्थियों के शानदार प्रदर्शन पर खेल मैदान में उपस्थित स्टाफ एवं अन्य विद्यार्थियों ने

तालियों के साथ उनका उत्साहवर्धन किया। इसके अतिरिक्त राजकीय महाविद्यालय की छात्राओं के लिए दौड़ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न

युदवंशी डिग्री कॉलेज ने एमए राजनीति विज्ञान में लहराया परचम



महेंद्रगढ़। युदवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने किरण पुत्र सुमेर सिंह ने 79.23 प्रतिशत अंक प्राप्त करके दूसरा स्थान तो पुष्पा कुमारी पुत्री सतपाल सिंह ने 76.31 प्रतिशत प्राप्त करके पांचवा, रितिका पुत्री ईश्वर सिंह ने 75.85 प्रतिशत अंक प्राप्त करके छठा तथा ज्योति पुत्री विनोद कुमार ने 75.85 प्रतिशत प्राप्त करके नौवां तो वहीं कविता पुत्री अशोक सिंह ने 75.23 प्रतिशत अंक प्राप्त करके दसवां स्थान प्राप्त किया। इन सभी विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में स्थान बनाकर कॉलेज व परिजनों का नाम रोशन किया। युदवंशी ग्रुप चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों की मेहनत, लगन और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम ही ऐसी शानदार उपलब्धियों के रूप में सामने आता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने ज्ञान, व्यक्तित्व एवं संस्कारों के माध्यम से समाज और देश के विकास में योगदान देने का लक्ष्य रखना चाहिए। इस अवसर पर वाईस चेयरमैन करन सिंह, चेयरपर्सन संगीता यादव, सीईओ तनिष राव, ग्रुप डायरेक्टर विजय सिंह यादव, डॉ. प्रदीप यादव, कॉलेज प्राचार्य बगवान राम व समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। इन सबने भी सफल विद्यार्थियों को बधाई दी।



ज्ञानकोष-ए ग्लोबल स्कूल में मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस

महेंद्रगढ़। खरकड़ा आकोद स्थित ज्ञानकोष-ए ग्लोबल स्कूल में महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के सम्मान में राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। विद्यालय के सीईओ राकेश कुमार ने रिबन काटकर खेल का शुभारंभ किया, जिसमें फुटबाल, खो-खो 100 मी., रेस वा व 200 मी., रेस रस्साकशी लॉग जम्प व हाई जंप आदि खेलों में बच्चों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने बताया कि विद्यालय की छात्रा अंशुली पुत्री संदीप कुमार कक्षा आठवीं ने अपनी प्रतिभा दिखाते हुए ऑल इंडिया में उच्च रैंक प्राप्त करके विद्यालय व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। विद्यालय के राकेश व प्राचार्य रामनिवास ने छात्रा को बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



मंडी अटेली। महाविद्यालय में स्टैंडिंग जंप करते हुए। फोटो: हरिभूमि

अटेली महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस पर प्रतियोगिताएं

हरिभूमि न्यूज ॥ मंडी अटेली

राष्ट्रीय खेल दिवस एवं महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के मौके पर शनिवार को राजकीय महाविद्यालय अटेली में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को खेलों के प्रति जागरूक करने के साथ उनमें खेल भावना, अनुशासन एवं स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना रहा। इस मौके पर मेजर ध्यानचंद के खेलों में अनुलनीय योगदान को याद किया गया। विद्यार्थियों को उनके जीवन एवं उपलब्धियों से प्रेरणा लेने तथा नियमित रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग पारंपरिक एवं मनोरंजक खेल प्रतियोगिताएं कराई गईं। इनमें पिट्टू, गैलेरी, स्टैंडिंग जंप सहित विभिन्न प्रतियोगिताएं शामिल रही। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मैदान में विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। प्रतिभागियों ने पूरे जोश और खेल भावना के साथ प्रतियोगिताओं में

खेलों में भाग देने का आह्वान

उन्होंने अपने अद्भुत खेल कौशल और समर्पण से देश का नाम विश्व स्तर पर रोशन किया। खेल केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि इनके माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, टीम भावना, आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है। उन्होंने विद्यार्थियों से नियमित रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेने का आह्वान किया। वहीं खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन शारीरिक शिक्षा प्रभारी डॉ. संजयजी के निदेशन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

ये रहे मौजूद

इस दौरान एनसीसी अधिकारी डॉ. नीरज चौहान ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में श्री अक्षत कुमार, सुमन यादव, मीनाक्षी यादव, रीना यादव सहित अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

हिस्सा लिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले लड़के एवं लड़कियों को नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार सैनी ने कहा कि मेजर ध्यानचंद का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

न्यूज डायरी



अटेली के एमआर स्कूल में मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस

नारनौल। अटेली स्थित एमआर पब्लिक स्कूल में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया। विद्यालय में इस अवसर पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। यह दिन हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद को समर्पित किया गया। प्रतियोगिताओं की शुरुआत चेयरमैन सियाराया यादव ने समस्त स्टाफ के साथ मिलकर की तथा मेजर ध्यानचंद के बारे में अवगत करवाते हुए बताया कि उन्होंने भारत को ओलंपिक खेल में स्वर्ण पदक दिलाया था। इतना ही नहीं उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी को एक अलग पहचान दिलाई। इस दिन राष्ट्रीय खेल पुरस्कार से नवाजे गए खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

एमआर स्कूल में किया मेजर ध्यानचंद को याद

नारनौल। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर एमआर पब्लिक स्कूल निम्नपूराम में महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की स्मृति में विभिन्न खेल गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और खेल भावना का शानदार परिचय दिया। चेयरमैन सियाराय व प्रधानाचार्य अनीला यादव ने विद्यार्थियों को मेजर ध्यानचंद के जीवन, संघर्ष और भारतीय खेल जगत में उनके अनुलनीय योगदान के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मेजर ध्यानचंद ने अपनी प्रतिभा, मेहनत और अनुशासन के बल पर भारत को विश्व स्तर पर गौरवान्वित किया। विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया।

योग के लिए किया प्रेरित : डा. कृष्णा आर्या

नारनौल। चंदा आरोचय योगा एड्ड वेलनेस सेन्टर एवं आर्य समाज संघीयवास के तत्वाधान में रक्षाबंधन पर्व एवं उल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें समाजसेविका डॉ. कृष्णा कुमारी आर्या मुख्यातिथि एवं जिला भाजपा उपाध्यक्ष वासुदेव यादव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. कृष्णा आर्या ने उपस्थित लोगों को योग के महत्त्व के बारे में बताया और योग गीत गाकर सभी को योग के लिए प्रेरित किया तथा सभी को राष्ट्ररक्षा का सूत्र बांधा। इस अवसर पर संस्थान के योगाचार्य विश्वपाल आर्य ने लोगों को डाइट प्लान, उचित खानपान और योग के विविध प्रयोग बारे विस्तार से बताया। योग साधकों ने अपने अनुभव शेयर किए। वहीं पौधों की रक्षासूत्र बांधे गए।

चेयरमैन जगदेव यादव ने दिया नशामुक्त का संदेश

कनीना। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर शनिवार को एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल ककराला में हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की स्मृति में खेलों का आयोजन किया गया। कौड़ा भारतीय हरियाणा के तत्वाधान में आयोजित इन खेलों में विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। चेयरमैन जगदेव ने मेजर ध्यानचंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर खेलों का शुभारंभ किया। उन्होंने वॉलीबॉल, कबड्डी, एथलेटिक्स, बास्केटबॉल, हैंडबॉल, पिट्टू, शतरंज एवं रस्साकशी में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों से उत्साह, अनुशासन और खेल भावना के साथ प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। युवा खेलों से जुड़ने, तो उनकी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगेगी और समाज को नशामुक्त हरियाणा बंगाने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। प्रतियोगिता का संचालन खेल विभागाध्यक्ष सोनू कुमार के मार्गदर्शन में किया गया। इस मौके पर सीईओ रामधारी, डायरेक्टर ओमप्रकाश, पिट्टी डायरेक्टर पीएस यादव, कोऑर्डिनेटर देववत यादव, सुनील आदि उपस्थित थे।

नीलीनी मूचनाई

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाछौद 3859, खंड अटेली, जिला महेंद्रगढ़ के जर्नल स्कूल भवन के आठ कमरों के सामने की खुली बोली द्वारा नीलामी मंगलवार 08.09.2026 को प्रातः 10:00 बजे स्कूल प्रांगण में की जाएगी।

- प्रत्येक बोली दाता को ग्रोहर के रूप में ₹100000 स्कूल मुखिया के पास जमा करवाने होंगे।
- बोली से संबंधित शर्तें अर्थ में मौके पर बता दी जाएगी।
- स्कूल कमेटी का फैसला अंतिम होगा।

प्राचार्य एवं SMC

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाछौद 3859 खंड अटेली, जिला महेंद्रगढ़

संपर्क सूची : geesabachodhi@gmail.com

संपर्क संख्या : 9416232195

सरकारी कॉलेज में फिजिकल काउंसलिंग के बाद भी खाली रह गई सीटें

कॉलेज में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की हुई फिजिकल काउंसलिंग

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ महेंद्रगढ़

राजकीय महाविद्यालय में उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के निर्देशानुसार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में रिक्त सीटों पर प्रवेश के लिए फिजिकल काउंसलिंग का आयोजन किया गया। काउंसलिंग प्रक्रिया में एमए हिंदी, एमए अंग्रेजी, एमएससी भौतिक विज्ञान, एमएससी गणित एवं एमएससी रसायन विज्ञान में प्रवेश के इच्छुक छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महाविद्यालय के नोडल

अधिकारी प्रो. गगनदीप यादव ने बताया कि आयोजित फिजिकल काउंसलिंग में विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की रिक्त सीटों पर निर्धारित नियमों एवं मेरिट के आधार पर विद्यार्थियों को सीटें आवंटित की गईं। उन्होंने बताया कि काउंसलिंग के बाद एमए हिंदी में 19, एमए अंग्रेजी में 27, एमएससी. भौतिक विज्ञान में 20, एमएससी. गणित में 15 तथा एमएससी. रसायन विज्ञान में आठ सीटें अभी रिक्त हैं। इन रिक्त सीटों को निर्धारित शेड्यूल के अनुसार आगामी फिजिकल काउंसलिंग के माध्यम से भरा जाएगा। उन्होंने बताया कि आज की काउंसलिंग में सीट आवंटित होने वाले सभी अभ्यर्थी



महेंद्रगढ़। महाविद्यालय का मुख्यद्वार।

फोटो : हरिभूमि

कल दोपहर 12:00 बजे से पहले अपनी प्रवेश फीस ऑनलाइन माध्यम से अनिवार्य रूप से जमा करवाएं। निर्धारित समय सीमा में फीस जमा नहीं करवाने पर आवंटित सीट स्वतः निरस्त मानी जाएगी। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. विजय यादव ने बताया कि

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रतिदिन आयोजित होने वाली फिजिकल काउंसलिंग में भाग ले सकते हैं तथा उपलब्ध रिक्त सीटों पर मेरिट एवं निर्धारित नियमों के अनुसार प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

उच्च शिक्षा से दूरी बना रहे विद्यार्थी, अटेली व सिंहमा कॉलेज में भी सीटें खाली

मंडी अटेली। उच्चतर शिक्षा विभाग की ओर से विद्यार्थियों को दाखिला का पर्याप्त अवसर देने के बावजूद अटेली क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालयों में बड़ी संख्या में सीटें रिक्त रह गई हैं। विभाग ने इस बार पिछले वर्षों की तुलना में दाखिला प्रक्रिया भी पहले शुरू कर दी थी। विद्यार्थियों को ऑनलाइन आवेदन से लेकर विभिन्न चरणों में दाखिले का अवसर दिया गया। इसके बाद ओपन काउंसलिंग आयोजित कर रिक्त सीटों को भरने का प्रयास किया गया लेकिन इसके बावजूद सभी सीटें नहीं भर पाईं। अटेली के महिला महाविद्यालय में यूजी स्तर पर बीए की 300 सीटों में 219 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया, जबकि 81 सीटें खाली रह गईं। बीएससी की 80

सीटों में 43 दाखिले हुए और 37 सीटें रिक्त रह गईं। बीकॉम की 80 सीटों में केवल 30 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया जबकि 50 सीटें खाली हैं। एमए की 40 सीटों में 17 दाखिले हुए और 23 सीटें रिक्त रह गईं। वहीं राजकीय महाविद्यालय अटेली में भी स्थिति कुछ ऐसी ही है। यूजी स्तर पर बीए की 480 सीटों में 234 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया, जबकि 246 सीटें खाली रह गईं। बीएससी की 160 सीटों में 66 दाखिले हुए और 94 सीटें रिक्त हैं। बीकॉम की 80 सीटों में 39 दाखिले हुए, जबकि 41 सीटें खाली हैं। बीएससी में 60 सीटों में 53 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया और केवल सात सीटें रिक्त हैं। इसी प्रकार पीजी पाठ्यक्रमों में भी सीटें खाली हैं।

उच्च शिक्षा जारी रखने के बजाय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को प्राथमिकता दे रहे हैं छात्र

एमए इंग्लिश की 40 सीटों में 12 दाखिले हुए और 28 सीटें रिक्त रह गईं। एमए संस्कृत की 60 सीटों में केवल चार दाखिले हुए जबकि 56 सीटें खाली हैं। एमकॉम की 80 सीटों में 14 दाखिले हुए और 66 सीटें रिक्त हैं। एमएससी कंप्यूटर साइंस की 60 सीटों में 26 दाखिले हुए, जबकि 34 सीटें खाली रह गईं। वहीं महंत खेतानाथ राजकीय महाविद्यालय सिंहमा में बीए की 160

सीटों में 89 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया। जबकि 71 सीटें रिक्त हैं। बीकॉम में 80 सीटों में सात विद्यार्थियों ने दाखिला लिया। जबकि 73 सीटें रिक्त हैं। कॉलेजों में सीटें खाली रहने का एक प्रमुख कारण विद्यार्थियों के बदलते रुझानों को माना जा रहा है। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बड़ी संख्या में विद्यार्थी नियमित उच्च शिक्षा जारी रखने के बजाय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को

प्राथमिकता दे रहे हैं। विद्यार्थियों का मानना है कि स्नातक की पढ़ाई के साथ लंबे समय तक तैयारी करने के बजाय प्रतियोगी परीक्षाओं पर सीधे ध्यान केंद्रित करने से सरकारी नौकरी हासिल करने का अवसर जल्दी मिल सकता है। यही वजह है कि दाखिला प्रक्रिया समय से शुरू होने एवं ओपन काउंसलिंग के बावजूद कई पाठ्यक्रमों में सीटें खाली रह गई हैं।

शुक्रवार रात चोरों ने दो बंद मकानों को बनाया निशाना हेड कांस्टेबल-शिक्षक के बंद मकान में चोरी, 40 लाख के जेवरात गायब

सीसीटीवी कैमरा में कैद हुए संदिग्ध, गहली पुलिस चौकी के अधीन गांव मांखरी के दो बंद मकान में दिया वारदात को अंजाम

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

गहली पुलिस चौकी क्षेत्र के गांव मांखरी में शुक्रवार रात चोरों ने दो बंद मकानों को निशाना बनाया है। यहां से 40 लाख रुपये के जेवरात और नकदी पर हाथ साफ कर दिया गया। दोनों परिवार घर से बाहर गए हुए थे, जिसका फायदा उठाकर चोरों ने ताले तोड़ दिए। शनिवार सुबह पड़ोसियों और परिजनों ने घरों के ताले टूटे देखे तो चोरी का पता चला। अंदर का सामान बिखरा पड़ा था। सूचना मिलने पर दोनों परिवार मौके पर पहुंचे और पुलिस को घटना की जानकारी दी। पूरी वारदात घरों में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई, जिसमें आरोपितों के चेहरे भी साफ नजर आ रहे हैं। पीड़ित



नारनौल। सीसीटीवी कैमरा में कैद हुए संदिग्ध युवक।

फोटो : हरिभूमि

रात के समय चोरों ने ताला तोड़कर घर में प्रवेश किया और अलमारी में रखे पुतेतैनी जेवरात सहित लाखों रुपये का सामान किया चोरी

शिक्षक के मकान से भी चोरी

दूसरे पीड़ित हनुमान प्रसाद कोरियावास स्कूल में सरकारी अध्यापक हैं। उनकी पत्नी राजस्थान में अध्यापिका हैं, जबकि बच्चे सीकर में पढ़ाई करते हैं। छुट्टियों के चलते हनुमान प्रसाद दो दिन पहले बच्चों से मिलने सीकर गए हुए थे। इसी दौरान चोरों ने उनके सूने मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपये के जेवरात और नकदी चोरी कर ली।

वारदात सीसीटीवी में कैद दिखे संदिग्ध युवक

घटना के बाद सीसीटीवी फुटेज खंगाली गई। जिसमें चोर घरों में घुसने और वारदात के बाद निकलते दिखाई दे रहे हैं। फुटेज में आरोपितों के चेहरे भी स्पष्ट नजर आ रहे हैं। पीड़ितों ने गहली चौकी पुलिस को शिकायत देकर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपितों की पहचान कर जल्द गिरफ्तारी और चोरी गए सामान की बरामदगी की मांग की है।

बिजली लाइनों के आसपास सिंचाई करते समय प्लास्टिक पाइप का करें इस्तेमाल: एसडीओ मंडी अटेली।

खेतों में सिंचाई के दौरान बिजली लाइनों से होने वाले हादसों की रोकथाम को लेकर बिजली विभाग ने किसानों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। बिजली विभाग ने किसानों

से अपील की है कि बिजली की लाइनों के नीचे अथवा आसपास सिंचाई करते समय लोहे के पाइप के बजाय प्लास्टिक के पाइप का इस्तेमाल करें। बिजली विभाग अधिकारियों के अनुसार थोड़ी सी लापरवाही गंभीर हादसे का कारण बन सकती है। उपमंडल कार्यालय सिंहमा के एसडीओ अमित सोनी ने किसानों को बिजली लाइनों के आसपास विशेष सतर्कता बरतने की अपील की।

सुपरवाइजर ने किया बूयों का निरीक्षण

सकनौली मंडी। विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत एसडीओ आईएसएस योगेश सैनी के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए सुपरवाइजर विजय कुमार पारीक ने विभिन्न बूयों व गांव का दौरा किया। उन्होंने अपील की कि एसआइआर के अंतर्गत जिन लोगों को कुआर आयोग की ओर से नोटिस मिला है, वह अपने उचित डायरेक्ट्स लेकर के बीएलओ से जल्दी से जल्दी मिलें, ताकि डॉक्यूमेंट के अभाव में किसी का वोट फाइनल लिस्ट में आने से न रह जाए। उन्होंने नगरिकों से अपील करते हुए कहा कि अपने-अपने वोट वनचाप व किसी प्रकार की वोटों में जुटें हो तो व भी ठीक करवाएं। उन्होंने बताया कि शनिवार को सकनौली के बूथ नंबर आठ पर बीएलओ विनोद कुमार, बूथ नंबर नौ पर सीमा, बूथ नंबर 10 पर प्रेमपाल, बूथ नंबर 11 पर सतीश, बूथ नंबर 12 पर पुर्तु सिंह, बूथ नंबर 13 पर प्रियंका, बूथ नंबर 14 पर योगेंद्र सिंह व सकनौली बार के बूथ नंबर 20 पर सुनील कुमार, बूथ नंबर 21 पर संजय कुमार व बीरसिंह बास के बूथ नंबर 22 पर राजसिंह बाबलओ से फॉर्म नंबर छह, फॉर्म नंबर सात और फॉर्म नंबर आठ प्राप्त किए।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड़ा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरुण कंठर लेब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

हॉकी जादुगर मेजर ध्यानचंद युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत: वेदपाल

नारनौल। श्रीकृष्ण सैनियर सेकेंडरी स्कूल मुंजारका में मेजर ध्यानचंद जयंती के अवसर पर विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। जिसमें प्राचार्य वेदपाल यादव ने विद्यार्थियों को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जीवन, खेल प्रतिभा और देश के प्रति उनके योगदान के बारे में जानकारी दी। प्राचार्य ने कहा कि मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है। उनकी हॉकी पर ऐसी अद्भुत पकड़ थी कि गेंद उनके नियंत्रण से बाहर नहीं जाती थी। उनके खेल से प्रभावित होकर कई बार विपक्षी टीम के खिलाड़ी उनकी हॉकी स्टिक तक बदलवाने की मांग करते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होता था कि इतनी शानदार ड्रिब्लिंग और गोल करने की क्षमता किसी खिलाड़ी में हो सकती है। प्रार्थना सभा के बाद विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने कहा कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और सहयोग की भावना का विकास होता है।



विकास

रेलवे स्टेशन पर मूलभूत सुविधाओं का कार्य जोरों पर दैनिक रेलयात्री महासंघ ने अपनी मांगों का सांसद को सौंपा ज्ञापन

दिल्ली से लुहारू तक दो ईएमयू सुबह शाम नई ट्रेन चलाने की मांग

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ महेंद्रगढ़

आदर्श रेलवे स्टेशन पर नई ट्रेनों का ठहराव, विस्तार, फेरे बढ़ाने व ट्रेनों की क्षमता किसी खिलाड़ी में हो सकती है। प्रार्थना सभा के बाद विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने कहा कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और सहयोग की भावना का विकास होता है।

स्टेशन पर गाड़ी संख्या.12259-60 सियालदह दुर्गो से बीकानेर, एक गाड़ी का महेंद्रगढ़ के आदर्श रेलवे स्टेशन पर ठहराव कराया जाए। उन्होंने बताया कि गाड़ी संख्या 19701-2 सैनिक एक्सप्रेस जयपुर-दिल्ली का विस्तार चंडीगढ़ तक करने, गाड़ी संख्या 54789-90 बीकानेर रेवाड़ी पैसेंजर का विस्तार दिल्ली की तथा हनुमानगढ़-श्रीगंगानगर से सादलपुर तक एक गाड़ी का विस्तार रेवाड़ी तक करने, बीकानेर, जोधपुर, गंगानगर वाया महेंद्रगढ़ बीकानेर से सुबह 4 बजे एक नई इंटरसिटी दिल्ली सराय रोहिल्ला तक चलाने, जोधपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर से सबसे पुराने रेलवे स्टेशनों में से एक है। लेकिन वर्तमान में इस रेलवे स्टेशन पर मूलभूत सुविधाओं का कार्य जोरों पर है। महेंद्रगढ़ रेलवे



महेंद्रगढ़। सांसद चौ. धर्मबीर सिंह को ज्ञापन सौंपते हुए।

फोटो : हरिभूमि

दिल्ली से लुहारू तक दो ईएमयू नई ट्रेन चलाने, महेंद्रगढ़ रूट पर तीर्थ स्थान के लिए प्रतिदिन लंबी दूरी की एक सुपरफास्ट नई ट्रेन चलाने की मांगें उठाई हैं। गाड़ी संख्या 15623-24 कामख्या से वाया महेंद्रगढ़ भगत की कोठी को एक दिन बढ़ाकर सप्ताह में तीन दिन तक करने, गाड़ी

संख्या 12371-72 हावड़ा से बीकानेर एक दिन की बजाय सप्ताह में तीन दिन चलाने, गाड़ी संख्या 14713-14 दिल्ली-सीकर दो दिन के बजाय प्रतिदिन चलाने दिए। गाड़ी संख्या 22481-82 जोधपुर-दिल्ली, गाड़ी संख्या 12457-58 बीकानेर दिल्ली, गाड़ी संख्या

19701-02 सैनिक जयपुर-दिल्ली, गाड़ी संख्या 14727-28 श्री गंगानगर-दिल्ली इन चारों गाड़ियों का रात्रि के समय दिल्ली आने जाने में एक घंटे के समय का बचलाव किया जाए। रेवाड़ी-महेंद्रगढ़ संक्शन पर ऑटोमेटिक सिग्नल की सुविधा तथा रेवाड़ी से महेंद्रगढ़

रेलवे लाइन का दोहरीकरण, रेवाड़ी-सादलपुर रेलवे लाइन का दोहरीकरण जल्द करवाने, महेंद्रगढ़ स्टेशन पर टिकट एक्सामिनियर की पोस्ट खोली जाए। इसके अलावा भी क्षेत्र के रेल यात्रियों की अनेक समस्याओं पर सांसद को अवगत करवाया गया। अलवर, नारनौल, महेंद्रगढ़, चरखी दादरी नई रेलवे लाइन की योजना काफी पुरानी है जिस पर शीघ्र काम शुरू हो। झंजर, कोसली, कनीना, नारनौल नई रेलवे लाइनें से महेंद्रगढ़ को जोड़ा जाए, क्योंकि यहां पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न हिस्सों से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। इसके अलावा प्रदेश में महेंद्रगढ़ शिक्षा का सबसे बड़ा हब बन चुका है। महेंद्रगढ़ के अमृत स्टेशन को जंक्शन बनाने की भी मांग की।

विशेष: जन्माष्टमी, 4 सितंबर

हमारे आराध्य-पथप्रदर्शक पूर्णावतार श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव नहीं, एक स्मरण है कि कान्हा की हर लीला, हर प्रसंग हमें आचरण के वो पाठ सिखाते हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके युग में थे। यही वजह है कि युगों बाद भी पूर्णावतार श्रीकृष्ण हमारे लिए आराध्य भगवान ही नहीं, शिक्षक की तरह जीवन के पथप्रदर्शक भी बने हुए हैं।

आवरण कथा

रामिनी रामपल्लीवार

भगवान श्रीकृष्ण को हम पूजते हैं, यह सत्य है। मंदिरों में उनकी प्रतिमा सजती है, जन्माष्टमी पर घर-घर दीप जलते हैं और भजनों में उनका नाम गूंजता है। पर यदि कृष्ण केवल पूजा तक सीमित रह जाएं, तो शायद हमने उन्हें आधा ही जाना। उनका अवतारी जीवन कोई कथा-मात्र नहीं, बल्कि ऐसा दर्पण है, जिसमें झाँककर हम अपने आचरण को तराश सकते हैं। वे केवल आराध्य नहीं, आचार्य सदृश पथप्रदर्शक भी हैं। आज की दुनिया में हमारे सामने कुरुक्षेत्र जैसा कोई युद्ध नहीं है, फिर भी हमारे भीतर न जाने कितने युद्ध चल रहे हैं। रिश्तों में अविश्वास है, सफलता की होड़ है, अकेलापन है, विफल होने का डर है और हर समय दूसरों से अपनी तुलना करते रहने की बेचैनी है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण को केवल मंदिर में पूजने की नहीं, उनके गुणों को आत्मसात करने की भी जरूरत है।

सच्ची मित्रता की मिसाल: सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता आज भी मित्रता का सबसे सुंदर उदाहरण है। एक ओर द्वारिकाधीश, दूसरी ओर अभाव में जीवन बिताता उनका बालसखा। जब सुदामा संकोच में लिपटे, साधारण वस्त्र पहने और मुड़ी भर चिवड़ा लेकर द्वारका पहुंचे, तो श्रीकृष्ण ने अपने मित्र को राजसी औपचारिकताओं के पीछे नहीं छिपने दिया। वे आगे बढ़े, उन्हें गले लगाया और उनके लिए छोट-से उपहार को उसी प्रेम से स्वीकार किया, जैसे वह कोई अनमोल भेंट हो। न वहां धन का भेद था, न पद का अहंकार। सच्ची मित्रता समय और परिस्थिति की मोहताज नहीं होती। वह यह नहीं पूछती कि आज तुम कितने सफल हो, बल्कि यह याद रखती है कि तुम कभी मेरे अपने थे। आज जब दोस्ती भी कई बार सुविधा, हैसियत और सामाजिक दायरे से तय होती है, श्रीकृष्ण का जीवन एक सवाल करता है कि क्या हमारे पास ऐसा मित्र है, जिसके सामने हमें अपनी सफलता साबित करने की जरूरत नहीं पड़ती? और क्या हम किसी के लिए ऐसे मित्र हैं?

मित्रता का दूसरा रूप भी: अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की मित्रता इसका दूसरा रूप दिखाती है। यहां वह मित्र भी हैं, सारथी भी और

मार्गदर्शक भी। कुरुक्षेत्र में अर्जुन मोह और दुविधा से घिर गए। श्रीकृष्ण ने उनकी जगह निर्णय नहीं लिया। उन्होंने उनके भीतर के भ्रम को समझा, प्रश्नों का उत्तर दिया और अंततः निर्णय लेने की शक्ति अर्जुन के भीतर ही जगाई। आज के जीवन में भी सच्चा मित्र वही है, जो केवल हमारी हानि में हानि न मिलाए। जब हम भ्रमित हों, तब सही बात कहने का साहस रखे और फिर निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी हमें दे।

स्त्री सम्मान के रक्षक: द्रौपदी के अपमान का प्रसंग महाभारत का सबसे पीड़ादायक प्रसंग है। भरी सभा में जब उसकी गरिमा पर आघात हुआ और वह असहाय होकर सहायता की पुकार करती रही, तब श्रीकृष्ण उसके भरोसे का केंद्र बने। पर इस प्रसंग की सबसे बड़ी सीख केवल चमत्कार में नहीं, उस प्रश्न में है जो हमसे पूछता है कि जब किसी स्त्री के सम्मान पर आंच आए, तब हम कहां खड़े होते हैं?

श्रीकृष्ण का जीवन बताता है कि सामर्थ्य का अर्थ केवल स्वयं को सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि जरूरत के समय किसी दूसरे की गरिमा की रक्षा के लिए खड़ा होना भी है। आज स्त्री-सम्मान की बातें बहुत होती हैं। लेकिन सम्मान केवल अच्छे-बड़े शब्दों से नहीं आता। वह हमारे व्यवहार, हमारी दृष्टि और उस समय लिए गए निर्णयों में दिखाई देता है, जब किसी के साथ अन्याय हो रहा हो। श्रीकृष्ण का यह रूप हमें संवेदनशील होने के साथ साहसी होना भी सिखाता है।

समर्थ होकर भी विनम्र: श्रीकृष्ण के पास अपार सामर्थ्य था, फिर भी उन्होंने महाभारत के युद्ध में शस्त्र न उठाने का निर्णय लिया और अर्जुन के सारथी बने। एक योद्धा का सारथी बनना किसी शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि विनम्रता का अहंकार से ऊपर रखने का उदाहरण था। आज की दुनिया में सफलता के साथ अहंकार बहुत आसानी से चला आता है। पद बदलता है तो व्यवहार बदल जाता है, कमाई बढ़ती है तो पुराने रिश्ते छोटे लगने लगते हैं। श्रीकृष्ण इसके ठीक उलट खड़े दिखाई देते हैं। वे सिखाते हैं कि ऊँचाई का असली अर्थ ऊपर उठना नहीं, ऊपर उठकर भी सहज बने रहना है।

हर परिस्थिति में संतुलन: श्रीकृष्ण का जीवन संघर्षों से भरा था। जन्म कारागार में हुआ, बाल्यकाल में अनेक संकट आए, मथुरा छोड़कर द्वारका बसानी पड़ी और अंततः अपने ही वंश के

विशेष: शिक्षक दिवस, 5 सितंबर

गुरुकुल से गूगल-एआई तक

बरकरार है शिक्षक की महत्ता

बदलाव / लोकमित्र गौतम

एक समय था, जब ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ किसी गुरु के सान्निध्य में बैठकर जीवन को समझना होता था। शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती थी बल्कि वह संस्कार, अनुशासन, विवेक और चरित्र निर्माण का माध्यम भी थी। भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया गया है, क्योंकि वह अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक होता है। लेकिन ये सब पुरानी बातें हैं। आज 21वीं सदी में दुनिया बदल चुकी है। ज्ञान हमारी हथेली पर मौजूद है। मोबाइल फोन में समा गया है। गूगल के माध्यम से हम मिनटों में ही सैकड़ों सवालों के उत्तर दे सकते हैं और अब तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत दुनिया के जटिल से जटिल सवाल का भी सेकंडों में उत्तर प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या तकनीक के इस युग में गुरु यानी शिक्षक की भूमिका बदल गई है या फिर उसका महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है?

ज्ञान कम-जानकारियां बेशुमार: वास्तव में आज तकनीक ने ज्ञान तक हमारी पहुंच बेहद आसान कर दी है। पहले किसी विषय को समझने के लिए पुस्तकालयों की धूलभरी अलमारियां खंगालनी पड़ती थीं। जबकि आज दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के दुर्लभ व्याख्यान, शोधपत्र और पाठ्यक्रम महज कुछ क्लिक की दूरी पर उपलब्ध हैं। आज हम किसी भी विषय पर वीडियो देख सकते हैं, चाहे छात्र हों या न हों। वास्तव में इस परिवर्तन ने शिक्षा को बेहद लोकतांत्रिक बनाया है। अब गुणवत्तापूर्ण जानकारी केवल बड़े शहरों या प्रतिष्ठित संस्थानों तक सीमित नहीं है। लेकिन एक महत्वपूर्ण अंतर भी पैदा हुआ है। आज जानकारी और ज्ञान एक-दूसरे के पर्याय नहीं रहे। जानकारीयां सिर्फ तथ्यों का संग्रह है, जबकि ज्ञान उन तथ्यों को सही संदर्भ में समझने और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने का माध्यम है। गूगल यह बताता है कि कोई निर्णय कैसे लिया जा सकता है? एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे सामने किसी विषय का सार प्रस्तुत कर सकती है। लेकिन वह हमें जीवन के अनुभव, संवेदना और

मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकती। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा: भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाता बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण भी करता है। महर्षि वेदव्यास, आचार्य चाणक्य, गुरु वशिष्ठ, गुरु द्रोणाचार्य से लेकर आधुनिक काल में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे अनेक शिक्षकों ने सिर्फ ज्ञान भर नहीं दिया बल्कि अपने शिष्यों में दृष्टि, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व का भाव भी विकसित किया है, जो किसी भी मशीन या सॉफ्टवेयर के बस में नहीं है। बदल गई शिक्षक की भूमिका: आज के समय में शिक्षक की भूमिका काफी हद तक बदल गई है, लेकिन समाप्त नहीं हुई। पहले शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता था, अब वह सिर्फ ज्ञान का मार्गदर्शक बनता जा रहा है। पहले छात्र उत्तर जानने के लिए शिक्षक पर निर्भर थे, आज यह काम तो इंटरनेट भी कर देता है। लेकिन सही उत्तर की पहचान करना, उसकी विश्वसनीयता को परखना, विभिन्न विचारों की तुलना करना और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करना, अभी भी यह सब भूमिकाएं शिक्षक के पास ही हैं। आज शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने, तर्क करने और स्वतंत्र सोच विकसित करने की क्षमता भी पैदा करना है। और महत्वपूर्ण हो गई भूमिका: वास्तव में एआई या कोई भी तकनीक चाहे जितनी उन्नत हो, लेकिन है तो एक तकनीक ही। यह शिक्षक को स्थानापन्न नहीं कर पाएगी। एआई के बावजूद शिक्षक का काम रचनात्मक उपयोग, पहले से कहीं ज्यादा जरूरी बना रहेगा। एआई के बावजूद शिक्षक का काम शिक्षा को अधिक रोचक बनाना बना रहेगा और एआई के बावजूद शिक्षक व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहेगा, यानी एआई हर किसी को एक जैसी सहूलियत नहीं दे सकता। जो एआई के उपयोग में माहिर नहीं है, उन्हें अभी-भी ज्ञान, जानकारीयां और विश्लेषण के लिए शिक्षक की तरफ ही देखना होगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर हमें यह भी समझना चाहिए कि गुरु का काम केवल सूचना देना भर नहीं होता। वह जीवन को दिशा देता है।

दोहे

राजेंद्र श्रीवास्तव

बरस रहे घनघोर

कल जाने क्या कर गए, इन मेघों से गोर।
आज भोर से ही यहां, बरस रहे घनघोर॥
बरसे मेघा श्रवदरत, भरे तलैया-तात।
उड़े पवन के साथ फिर, बेचारे कंगाल॥
इस रिगिझि बरसात में, भीगी-भीगी भोर।
शहरों में सड़कें धुलें, दन में बाघे गोर॥
सांझ ठले सिर पर पड़ी, शीतल सुखद फुहार।
झन-झन झन झंकृत हुए, मन-वीणा के तार॥
पादस रितु में छा गए, नभ पर घन भरपूर।
श्रिभनंदन यातक करें, स्वागत-नृत्य गमूर॥
सुनौ पपील की कहीं, पिय-पिय करुण पुकार।
आस बंधाने आ गई, यह पावसी फुहार॥
गाठी की मनुहार पर, मेघ गया नन हार।
रुककर बरसाने लगा, प्यार और जल-धार॥

लघुकथाएं

जीवन सारथी

ओ हीरो !

अपनी सहेली दिव्या से पायल ने दुविधा प्रकट करते हुए कहा, 'मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं यह शादी करूं या नहीं?' 'क्यों क्या हुआ, अच्छे-खासे घर का बहि्या कमाने वाला हैडसम बंदा है।' दिव्या ने समझाया। 'असल में जब से सगाई हुई है, तब से हम दोनों की नियमित बात होने लगी है।' 'हां तो यह तो और अच्छी बात है। मैरिज के पहले ही एक-दूसरे को समझने का मौका मिल रहा है।' दिव्या ने उसकी आशंका को कम करना चाहा। 'यहीं से तो मुश्किल शुरू हुई है।' बात-बात पर वह गुस्सा करने लगते हैं। मैं उनसे कहती कुछ हूं और वह उस बात का कुछ और (मनमाता) अर्थ निकालकर मुझ पर ऐसे दोष मढ़ते हैं कि मैं अपराधबोध से ग्रसित हो जाऊं। बात-बात पर मुझसे झूठ भी बोलते हैं। समझ नहीं आ रहा है कि इस रिश्ते के लिए न करूं तो कैसे? डर है इससे सब घर वाले नाराज हो जाएंगे।' पायल ने चिंतित होते हुए सारी बात बताई। 'पागल हो गई हो तुम। जब तुम्हारा भावी साथी अपने व्यवहार से रेंड सिमल दे रहा है, तब क्यों सबकी खुशी के लिए खुद को झोंक देने को तुली हुई हो? अगर तुमने अभी दुढ़ता से मनचाहा निर्णय नहीं लिया तो वह शख्स, तुम्हारा जीवनसाथी नहीं जीवन सारथी बन जाएगा। अब डिसाइड तुमको करना है कि तुम्हें जीवनसाथी चाहिए या जीवन सारथी।' दिव्या ने स्पष्ट तौर पर उसे समझाया। उसकी इस समझाइश से पायल की आंखों में दृढ़ निर्णय लेने की चमक साफ नजर आने लगी।
-आरती आस्था

मेरे पास जड़ें/जितनी पैरों के नाखून में फंसी मिट्टी।' (नाखून में फंसी मिट्टी) जैसी पंक्तियां में महसूस किया जा सकता है। किसानों की मनोव्यथा को इस पंक्ति में देखा जा सकता है, 'वह किसी मुलायम मिट्टी जितना भुरभुरा है/इस तरह कि बूने से टूट जाए' (इन दिनों किसान)। इसी तरह 'खी का दुख' कविता की ये पंक्तियां हमें खी जीवन की उस मार्मांत पीड़ा की अनुभूति कराती हैं, जिसे प्रायः पुरुषों के द्वारा उपेक्षित ही किया जाता रहा है, 'कुछ दुख होते ही हैं ऐसे/जिसे कहा नहीं जाता/जुबान लाचार हो जाती है।' संग्रह की अधिकांश कविताएं हमारे समय की कुरूप छवियों को पूरी संवेदना के साथ सामने रखती हैं।
किताब: नाखून में फंसी मिट्टी (कविता संग्रह), रचनाकार: शंकरानंद, मूल्य: 325 रुपए, प्रकाशक: सेतु प्रकाशन, नोएडा

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ खुश ग्राहक

आपके नजदीकी मोमी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mushroomworld.com
amazon | Flipkart

वजन बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियां

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वजन है, तो वजनवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry - +91 888 922 3333

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

निष्करुण समय में

हम जिस समय-समाज में जी रहे हैं, वह एक बड़े वर्ग के लिए बहुत निर्मम और निष्करुण है। संतोष की बात है कि हाशिए पर निरंतर धकेले जा रहे ऐसे वर्ग की दबी-दबी ही सही कुछ आवाजें, कविताओं में यदा-कदा सुनाई पड़ जाती हैं। युवा कवि शंकरानंद के नए कविता संग्रह 'नाखून में फंसी मिट्टी' की कविताओं को भी इस नजरिए से देखा जा सकता है। इन कविताओं में जीवन की त्रासदियों को वे बहुत सशक्तता से व्यक्त करते हैं। मिसाल के तौर पर गांव से शहर में विस्थापन की बाध्यता के दर्द को 'मेरे साथ गांव/सिर्फ परिचय में कागज पर है/ बस उतनी ही है

नाखून में फंसी मिट्टी

शंकरानंद

जन्माष्टमी पर लोकआस्था ही नहीं भक्ति का केंद्र बन जाता है मथुरा



धार्मिक स्थल / वीणा गौतम

भाद्रपद या भादों का महीना आते ही देश के नक्शे पर एक शहर भक्ति और भावना का संगम, आस्था का केंद्र बन जाता है, यह शहर है- भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा। भादों महीने में, जो कल ही आरंभ हुआ है, मथुरा की गलियां अपने आपमें तीर्थ बन जाती हैं। हर गली में मौजूद अनेक मंदिरों वाला यह शहर एक विशाल पूजा स्थल में बदल जाता है।

पूरा शहर हो जाता है कृष्णमय: जन्माष्टमी के दिन तो मथुरा में पूरी रात देश के कोने-कोने से आए लाखों तीर्थयात्री भक्ति का जागरण करते हैं। सिर्फ जन्माष्टमी के दिन ही नहीं, पूरे भादों महीने में यहां देश ही नहीं बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए तीर्थयात्रियों की उत्सवमयी मौजूदगी उल्लास गुंजता रहता है। हालांकि साल के बाकी दिनों में भी मथुरा में तीर्थयात्रियों की भरमार रहती है, लेकिन जन्माष्टमी की तो बात ही अलग होती है। इस दौरान तो जैसे पूरे महीने यह पूरा शहर कृष्णमय उत्सव का साक्षी बन जाता है।

पर्यटकों के ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था: इस साल कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितंबर 2026 को पड़ रही है और एक पखवाड़े पहले से ही तीर्थयात्रियों की ठहरने वाली सभी जगहें फुल हो चुकी हैं। लेकिन यह बात भी है कि इस शहर में तीर्थयात्रियों को ठहरने की कभी समस्या नहीं रहती, क्योंकि एक दशक पहले प्रचलित हुए, घर पर पर्यटकों को ठहराने की नीति के कारण मथुरा में बहुत सारे लोग इस मौके पर अपने घरों को तीर्थयात्रियों के लिए खोल देते हैं। इस तरह पर्यटकों को सुविधाजनक 'होम स्टे' का आनंद भी मिल जाता है। इसलिए उमड़ता है जन्मसैलाब: भादों के महीने में यहां

कंधे पर टंगा बैग अब सिर्फ किताबों/जरूरी सामानों का कैरियर नहीं रहा। अब बैगपैक भी यंगस्टर्स का स्टाइल स्टेटमेंट बन गए हैं। स्टाइल और कंफर्ट के कॉम्बो वाले ये बैगपैक्स आज के यंगस्टर्स को खूब भा रहे हैं।

यंगस्टर्स को भा रहे हैं बैगपैक के नए स्टाइल



न्यू ट्रेंड
संध्या सिंह

कोलेज, कोचिंग, ऑफिस या छोटी-छोटी ट्रेवलिंग, आज के अधिकांश युवा बहुत मूवमेंट करते रहते हैं। ऐसे में बैगपैक अब सिर्फ किताबें ढोने वाला बैग नहीं रह गया, बल्कि युवाओं की रूटीन लाइफस्टाइल, जरूरतों और पर्सनैलिटी का अहम हिस्सा बन चुका है। समय के साथ बैगपैक का स्वरूप भी बदला है। अब युवा ऐसा बैगपैक चाहते हैं, जो स्टाइलिश दिखने के साथ-साथ लैपटॉप की सुरक्षा करे, मोबाइल चार्ज करने में मदद करे, बारिश से सामान को बचाए और भीड़-भाड़ में चोरी से भी सुरक्षित रहे। यही कारण है कि बाजार में 'स्मार्ट बैगपैक' की मांग लगातार बढ़ रही है।

जरूरतों के हिसाब से बदलता बैगपैक: एक समय था, जब बैगपैक का मतलब केवल दो बड़े कंपार्टमेंट और पट्टियां हुआ करता था। लेकिन इस डिजिटल युग में विद्यार्थियों की जरूरतें बदल गई हैं। अब कॉलेज जाने वाले अधिकांश युवाओं के बैग में किताबों के साथ-साथ लैपटॉप, टैबलेट, चार्जर, पावर बैंक, ईयर बड्स, पानी की बोतल और कई अन्य जरूरी सामान भी होता है। इन्हीं बदली जरूरतों को देखते हुए कंपनियां ऐसे

बैगपैक बना रही हैं, जो सुविधाओं से भरपूर और देखने में बेहद स्मार्ट हों।

मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन: आज के आधुनिक बैगपैक की सबसे बड़ी खासियत उसका मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन है। इसमें लैपटॉप के लिए अलग कुशनयुक्त हिस्सा, टैबलेट पॉकेट, चार्जर और केबल के लिए छोटे पॉकेट, पेन होल्डर और पानी की बोतल रखने के लिए अलग-अलग जगहें होती हैं। इससे सामान व्यवस्थित रहता है और जरूरत पड़ने पर तुरंत मिल जाता है।

वाटर रेजिस्टेंट फीचर: बारिश के मौसम को देखते हुए वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक वाले बैगपैक तेजी से लोकप्रिय हुए हैं। इसमें अचानक बारिश होने पर भी लैपटॉप, नोटबुक और दस्तावेज सुरक्षित रहते हैं। कुछ बैगों के साथ रेन कवर भी मिलता है, जिससे अतिरिक्त सुरक्षा मिल जाती है। जिन छात्रों को रोज लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, उनके लिए यह बेहद उपयोगी होता है।

एंटी-थेफ्ट फीचर: बैगपैक में अब एंटी-थेफ्ट फीचर भी जोड़े जा रहे हैं। छिपी हुई जिप, पीछे की ओर सीक्रेट पॉकेट, मजबूत लॉकिंग सिस्टम, यात्रा के दौरान चोरी या जोखिम को कम करते हैं। मेट्रो, बस और रेलवे स्टेशन जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर यह सुविधा विशेष रूप से काम आती है।

चार्जिंग की सुविधा: टेक्नोलॉजी ने बैगपैक को और भी स्मार्ट बना दिया है। कई बैगों में यूएसबी चार्जिंग पोर्ट दिया होता है, इसमें अंदर पावर बैंक रखकर बाहर लगे पोर्ट से मोबाइल चार्ज किया जा सकता है। ऐसे में लगातार मोबाइल और इंटरनेट पर निर्भर युवाओं को बहुत सुविधा होती है। ये बेफिक्र होकर यात्रा कर सकते हैं।



स्मार्ट बैगपैक में हों ये फीचर्स: आपके बैगपैक में ये फीचर्स जरूर होने चाहिए, तभी वो स्मार्ट लगेंगे।

- इसमें लैपटॉप कंपार्टमेंट कुशनयुक्त और सही आकार का हो।
- वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक के साथ रेन कवर जरूरी है।
- एंटी-थेफ्ट पॉकेट और मजबूत जिप, सुरक्षा बढ़ाती है।
- गद्देदार शोल्डर स्ट्रैप और बैक सपोर्ट आरामदायक होने चाहिए।
- कम से कम 20 से 30 लीटर क्षमता वाला बैग कॉलेज छात्रों के लिए पर्याप्त रहता है।
- यूएसबी चार्जिंग पोर्ट जैसी सुविधा उपयोगी हो सकती है, लेकिन गुणवत्ता को प्राथमिकता दें। इस मामले में याद रखें कि खाली बैग का वजन जितना कम होगा, वह उतना ही बेहतर होगा।



जन्माष्टमी के पावन महीने भाद्रपद के आते ही मथुरा सिर्फ एक शहर नहीं रहता, बल्कि लोकआस्था का उल्लासमय केंद्र बन जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी की आहट के साथ वहां की गलियां, मंदिर और घाट भक्ति के रंग में रंग उठते हैं। आधी रात जन्मोत्सव के उस अलौकिक क्षण का साक्षी बनने देश-दुनिया से लाखों श्रद्धालु यहां उमड़ते हैं। यहां की विलक्षण मय्यता-दिव्यता पर एक दृष्टि।



देवकी-वासुदेव को कारागार की सजा, आधी रात में श्रीकृष्ण का जन्म और फिर नवजात शिशु को लेकर वासुदेव का यमुना पार करके गोकुल पहुंचना... हजारों साल से यह कथा भारतीय जनमानस में इस कदर रची बसी है कि यहां आने वाला हर श्रद्धालु, हर जगह श्रीकृष्ण की मौजूदगी देखता है। यही कारण है कि मथुरा आने वाले तीर्थयात्री सिर्फ मंदिर का दर्शन नहीं करते। वे पूरी मथुरा नगरी में अपने होने की अनुभूति करते हैं। जहां-जहां कृष्ण की मौजूदगी के वृत्तांत मौजूद होते हैं, पहुंचकर भक्ति, भावना से हम सराबोर हो जाते हैं। जन्माष्टमी की आधी रात, जैसे ही 12 बजते हैं, मंदिरों में गुंजती

सिने ट्रेंड मनोज प्रकाश

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों से भक्ति गीत-संगीत का नाता रहा है। इनमें भी भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित या उनका बाल्य-किशोर लीलाओं के इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में फिल्मी गीत रचे जाते रहे हैं और लोगों में भी इनके प्रति दीवानगी खूब देखने को मिलती है। बॉलीवुड में जब श्रीकृष्ण के विभिन्न नाम और उनकी लीलाओं पर आधारित गीतों का चलन आरंभ हुआ तो ये इतने लोकप्रिय हुए कि मंदिरों और पूजा-स्थलों में भी गाए-बजाए जाने लगे। बहुत लोकप्रिय हुए ये गीत: श्रीकृष्ण पर केंद्रित कई सुधमुर गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज में गाकर बहुत लोकप्रिय बना दिया। ये गीत श्रोताओं के मन को छूते हैं, आत्मा में उतरते हैं। इन गीतों को सुनकर अनायास ही मन में श्रीकृष्ण की मोहक छवियां उभरती हैं। सन 1972 में आई फिल्म 'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे' रे कृष्ण कन्हैया, का करे यशोदा मैया' आनंद बख्शी की कलम से निकलकर हर उस मां के लिए लोरी गीत बन गया, जो गोद में लिए बालक में बाल कृष्ण का रूप देखती हैं। 1978 की फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गोरी में क्यों काला' में बाल कृष्ण की नटखट अदाएं इस तरह से समाहित हैं कि लगता है जैसे नंदलाला हमारे सामने ही मां को उलाहना दे रहे हैं। इसी तरह लता मंगेशकर का गाया फिल्म 'संतोष' (1989) का गीत 'बंसी वाले ने घेर लई, अकेली जो पनिया भरन में गई' बृज क्षेत्र के साथ ही पूरे देश में लोकगीत की तरह खूब लोकप्रिय हुआ। फिल्म 'शागिर्द' (1967) का 'कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार', 'जॉनी मेरा नाम' (1970) का 'मोसे मोरा श्याम रूठा... छुप छुप मीरा रोए, दर्द न जाने कोई' जैसे कृष्ण भक्ति के रंग में रंगे कई गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज देकर अमर बना दिया। ये आज भी पूरे मन से सुने जाते हैं। **भक्ति-भाव से भरे कृष्ण गीत:** भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित कई हिंदी फिल्मी भजन भी खूब सुने सुनाए जाते हैं। वर्ष 1952 की फिल्म 'बैजू बावरा' में मोहम्मद रफी ने अपनी धीरे-धीरे आवाज में कृष्ण को याद करते हुए 'मन तड़पत हरि दर्शन को आंज' गाया था। इसे सुनकर श्रोता आज भी संभुमध हो जाते हैं। 1957 में आई फिल्म 'मिस मेरी' का गीत 'वृंदावन का कृष्ण कन्हैया सबकी आंखों का तारा, मन ही मन क्यों जले राधिका मोहन तो है

श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन किसी रुढ़िवादी परंपरा का नाम नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक व्यावहारिक और आधुनिक विज्ञान है। उनकी शिक्षाओं से जुड़ी ये बातें, आज के युवाओं को संतुलित, सफल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की राह दिखाती है।



आज के युवा श्रीकृष्ण से सीखें सुकून भरी जिंदगी के सूत्र

जीवन प्रेरणा
शिखर चंद जैन

भगवान श्रीकृष्ण केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक नहीं हैं, बल्कि वे एक कुशल मनोवैज्ञानिक, संकट प्रबंधक और लाइफ कोच भी हैं। आज की जेनरेशन यानी वह पीढ़ी जो इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साए में बड़ी हो रही है, एक और अभूतपूर्व अवसरों से घिरी है, तो दूसरी ओर मानसिक तनाव, अकेलेपन, 'फोमो' (फियर ऑफ मिसिंग आउट) और बर्नआउट जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। तेज रफ्तार और तुरंत परिणाम चाहने वाली इस दौर के युवाओं के लिए हजारों साल पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का उपदेश आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

हसल कल्चर का हल: आज के युवा 'हसल कल्चर' (रिजल्ट एंजाइटी) यानी रात-दिन भागदौड़ में उलझे रहते हैं। वे रील्स पर व्यूज, परीक्षाओं में टॉप करने या करियर में तुरंत मोटी सैलरी पाने के दबाव में लगातार जोते हैं। श्रीकृष्ण का सबसे प्रसिद्ध उपदेश है, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः।' इसका अर्थ है कि तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने पर है, उसके फल पर नहीं। श्रीकृष्ण युवाओं को समझाते हैं कि जब हम परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं, तो हमारी पूरी ऊर्जा एंजाइटी में नष्ट हो जाती है और हम वर्तमान कार्य को पूरी निपुणता से नहीं कर पाते। युवाओं को परिणाम की चिंता छोड़कर अपनी पूरी ऊर्जा प्रोसेस पर लगानी चाहिए।



वैलिडेशन-ट्रोलिंग से निपटने का मंत्र: आज के युवाओं का एक बड़ा हिस्सा अपनी खुशी और आत्म-सम्मान को सोशल मीडिया के लाइक्स, कमेंट्स और फॉलोअर्स की संख्या से मापता है। इस वजह से वे जरा-सी आलोचना या 'ट्रोलिंग' से टूट जाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण 'स्थितप्रज्ञ' होने की बात करते हैं यानी ऐसा व्यक्ति, जो सुख और दुःख, मान और अपमान, प्रशंसा और निंदा में एक समान रहता है। युवाओं को यह

समय में रिश्ते बहुत जल्दी बनते और बिगड़ते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएं सिखाती हैं कि प्रेम में 'आसक्ति' यानी पंजसिक्नेस के बजाय 'अनासक्ति' और निःस्वार्थ भाव होना चाहिए। श्रीकृष्ण ने राधा से प्रेम किया, लेकिन वे

जीवन भर उनके साथ नहीं रहे, उन्होंने रक्मिणी से विवाह किया और अपने राजनीतिक व सामाजिक कर्तव्यों का भी पालन किया। वे सिखाते हैं कि किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति पर इस कदर निर्भर मत हो जाओ कि उसके बदलने पर आपका जीवन ही ठहर जाए। जीवन में आगे बढ़ना ही सच्ची परिपक्वता है।

एंजाइटी पर नियंत्रण: आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है ओवरथिंकिंग यानी अत्यधिक सोचना। श्रीकृष्ण गीता के छठे अध्याय में कहते हैं, 'बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मेवात्मना जितः।' यानी जिस व्यक्ति ने अपने मन को जीत लिया है, उसका मन ही उसका सबसे अच्छा मित्र है। श्रीकृष्ण युवाओं को ध्यान, आत्म-नियंत्रण और सजगता के माध्यम से अपने भूतकेंद्रित हुए विचारों को नियंत्रित करने की सलाह देते हैं ताकि वे मानसिक शांति पा सकें। इस तरह श्रीकृष्ण युवाओं के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं।

जन्माष्टमी आते ही श्रीकृष्ण की लीलाओं और कृष्ण भक्ति से जुड़े गीत खूब सुनाई पड़ने लगते हैं। हिंदी सिनेमा में भी श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित ऐसे अनेक गीत रचे गए हैं, जो हर किसी की जुबान पर चढ़े हुए हैं। ऐसे ही कुछ लोकप्रिय गीतों पर एक नजर।

कृष्ण-कन्हैया के रंग में रंगो बॉलीवुड के लोकप्रिय गीत



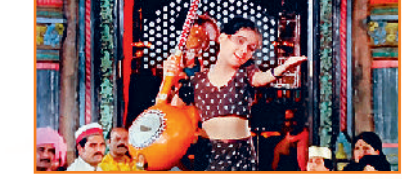
'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे'



'खुदा' का गीत 'मव गया शोर सारी नगरी रे'



'ब्लाफ मास्टर' का गीत 'गोविंदा आला रे'



'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से'

सबका प्यारा' आज भी जन्माष्टमी के अवसर पर सुना-गाया जाता है। मोहम्मद रफी की ही आवाज में फिल्म खानदान (1965) का गीत 'बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तक बुजवाला, ग्वाल-बाल इक-इक से पूछे कहाँ है मुरली वाला रे' श्रीकृष्ण पर केंद्रित सबसे लोकप्रिय गीतों में से एक है।

गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत: कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और

'मटकी और गोविंदा' का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है भला। फिल्म 'बदला' (1974) में किशोर कुमार का गाया गीत 'शोर मच गया शोर, देखो आया माखन चोर', 'खुदा' (1982) का 'मच गया शोर सारी नगरी रे, आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे' युवाओं को न सिर्फ जोश

में भरता है बल्कि कृष्ण की लीलाओं का इस तरह से बखान करता है कि मन में कन्हैया की शैतानियां हिलोरे लेने लगती हैं। ये गीत आज भी होली-जन्माष्टमी जैसे उत्सवों पर बजाए जाते हैं।

ऐसे ही 'ब्लाफ मास्टर' (1963) का गीत 'गोविंदा आला रे आला', 'ओह माइ गॉड' (2012) का 'गो गो गोविंदा', 'किसना : द वॉरियर पोएट' (2005) का 'वो किसना है' जैसे गीत भी खूब पॉपुलर हुए थे।

गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत: कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और

आज भी सुना जाता है। ऐसे ही 'हम साथ साथ हैं' (1999) का 'मैया यशोदा ये तेरा कन्हैया', लगान (2001) का 'राधा कैसे न जले' जैसे गीत आज भी लोकप्रिय हैं।



फिल्म 'लगान' का गीत 'राधा कैसे न जले'

श्रीकृष्ण पर केंद्रित गैर फिल्मी गीत भी हुए लोकप्रिय

श्रीकृष्ण पर केंद्रित लोकप्रिय फिल्मी गीतों के अतिरिक्त भजन गायकों और लोकगायकों द्वारा गाए कुछ गीत भी बहुत पॉपुलर हुए हैं। उदाहरण के तौर पर 'अरे झरपालों कन्हैया से कह दो', 'छोटी-छोटी मैया, छोटे-छोटे ग्वाल', हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की', अच्युतम केशवम कृष्ण दामोदरम, 'राधे राधे जपो चले आरों बिहारी' जैसे गीतों का जिक्र किया जा सकता है। ये ऐसे गीत हैं जो घर-घर में और मंदिरों में खूब सुने-सुनाए जाते हैं।